.. sarala gItA (GujarAtI) ..

॥ सरल गीता (गुजराती) ॥

सरल गीता (गुजराती)
श्री योगेश्वरजी
प्रकाशक :
सर्वमंगल चेरीटेबल ट्रस्ट
सकल एपार्टमेंट्स एक्स-३/ ४
नारणपुरा, अमदावाद-१३
१९९० आवृत्ति

A Note by the transliterator Suresh Vyas: At some places in this Gujarati Gita I have made a few changs. I have swapped or changed the words to make it more singable or to give correct meaning of the verse as given by Bhaktivedanta Swami Prabhupada. The original verse lines are shown in ( ) next to changed lines. If you like this, use it every day, and tell to others about it. Jai Sri Krishna! -sv panchajanya@geocities.com

गीतानुं माहात्म्य

पृथ्वी कहे छे :
प्रारब्ध तणो भोग जे जगमां जन करता, भक्ति उत्तम ते कहो केम करी लभता ॥ १ ॥
विष्णु भगवान कहे छे :
प्रारब्ध भले भोगवे, गीतारत पण जे, सुखी मुक्त ते थायछे, लेपाये ना ते. ॥ २ ॥
गीता ध्यान कर्या थकी पाप कदी न अडे, पद्म जेम जलमां छतां जल एने न अडे. ॥ ३ ॥
गीता ज्यां ने पाठ ज्यां गीताजीनो थाय, प्रयाग जेवा तीर्थ त्यां सर्वे भेगा थाय. ॥ ४ ॥
गीता-आश्रय हुं रहुं, गीता घर मारुं, गीताज्ञान थकी ज हुं त्रिलोकने पाळुं. ॥ ५ ॥
कर्म करे कोई छतां, जो गीता-अमल करे, जीवन मुक्त ते थाय ने सर्व प्रकार तरे. ॥ ६ ॥
(कर्म करे कोई छतां, गीता-अमल करे, जीवन मुक्त ते थाय ने सर्व प्रकार तरे. ॥ ६ ॥)
गीताछे त्यां अन्य कोई शास्त्रोनुं शुं काम, प्रभुना मुखथी प्रगट छे गीता दिव्य तमाम. ॥ ७ ॥
(गीताछे त्यां अन्य छे शास्त्रोनुं शुं काम, प्रभुना मुखथी प्रगट छे गीता दिव्य तमाम. ॥ ७ ॥)
भवसागर छे घोर आ, तरवा मागे जे, गीतारूपी नावनुं शरण लई ले ते. ॥ ८ ॥
पवित्र गीता-ग्रंथ आ, प्रेमे जे पढशे, प्रभुने पामी शोक ने भयथी ते छूटशे. ॥ ९ ॥
गीता प्रेमे जे पढे, प्राणायम करे, पूर्वजन्म आ जन्मनां तेनां पाप टळे। ॥ १० ॥
स्नान कर्याथी जायछे मेल देहनो जेम, गीता स्नाने जायछे मायानो मल तेम. ॥ ११ ॥
प्रभुमुखमांथी नीकळी गीता जे वांचे, अन्य शास्त्रने ते भले वांचे ना वांचे. ॥ १२ ॥

गंगाजल पीधा थकी अमृतस्वाद मळे, गीतानी गंगा थकी बीजो जन्म टळे. ॥ १३ ॥
उपनिषदनी गायने गोपाले दोही, अर्जुन वाछरडो, रह्युं गीता दूध सोही. ॥ १४ ॥
गीता एक ज शास्त्र छे, कृष्ण एक ज देव, मंत्र तेमनुं नाम ने कर्म तेमनी सेव. ॥ १५ ॥
ध्यान
प्रभुए पोते प्रेमथी कही निज सखाने, व्यास महर्षिए करी जेनी रचनाने; ॥ १ ॥
अढार ते अध्यायनी, अमृतथी ज भरी, भवतारक गीता, तने याद रह्यो छुं करी. ॥ २ ॥
कमलसमी सोही रही आंख जेमनी ते, व्यास महर्षि, हुं नमुं आज खूब प्रीते; ॥ ३ ॥
तेल महाभारत तणुं भरी जलाव्यो छे, ज्ञान दीवडो आ तमे दिव्य जगाव्यो छे. ॥ ४ ॥
शरणे आवे तेमने पारिजात जेवा, ज्ञानी कृष्ण, नमन हजो गीता गानारा! ॥ ५ ॥
वासुदेव, चाणुर ने कंस तणा हणनार, जगद्गुरु, तमने नमुं, कृष्ण, शांति धरनार! ॥ ६ ॥
मूंगा बोले, पंगुये चढे पर्वते तेम, जेनी कृपा थतां; नमुं कृष्ण, करी दो रेम. ॥ ७ ॥
ब्रह्मा, ईंद्र, वरुण ने देव स्मरे जेने, दिव्यगानथी गाय छे वेद महीं जेनेः ॥ ८ ॥
ध्यान धरी हैये जुए योगी जन जेने; जेने देव न जाणता, देव नमुं तेने. ॥ ९ ॥
–xxx–
सरल गीता

अध्याय १ : अर्जुनविषादयोग
(दोहरा)
धृतराष्ट्र कहे छे :
कुरुक्षेत्रना तीर्थमां मळिया लडवा काज, कौरव पांडव तेमणे कर्युं शुं कहो आज. ॥ १ ॥
संजय कहे छे :
जोई पांडवसैन्यने राजा दुर्योधन, द्रोण गुरु पासे जई बोल्यो एम वचन. ॥ २ ॥
गुरुदेव, सेनाजुओ पांडवनी भारी, द्रुपदपुत्र तम शिष्यथी सज्ज थई सारी. ॥ ३ ॥
अर्जुन भीमसमा घणा योद्धा छे शूरवीर, महारथी युयुधान छे द्रुपद विराट अधीर. ॥ ४ ॥
पुरुजित कुंतीभोज छे शैल्य श्रेष्ठ गुणवान, धृष्टकेतु ने चेकितान काशीराज बलवान. ॥ ५ ॥
युधामन्यु विक्रान्त ने अभिमन्यु रणवीर, उत्तमौज द्रौपदी-तनय सौ महारथी वीर. ॥ ६ ॥
हवे आपणा सैन्यना कहुं श्रेष्ठ जनने, द्विजश्रेष्ठ हे, सांभळो संक्षेप महीं ते. ॥ ७ ॥
तमे, भीष्म ने कर्ण छे सेनापति कृप छे, अश्वत्थामा विकर्ण नेसौमदत्ति पण छे. ॥ ८ ॥
बीजाए बहु वीर छे विविध शस्त्रवाळा, युद्धनिपुण जीवन मने अर्पण करनारा. ॥ ९ ॥
विराट सेना आपणी रक्षा भीष्म करे, पांडवसेना स्वल्प छे, रक्षा भीम करे. ॥ १० ॥
बधी तरफथी भीष्मनी रक्षा सर्व करो, निज स्थाने ऊभा रही रक्षा सर्व करो. ॥ ११ ॥
कुरुमां वृद्ध पितामहे शंख वगाड्यो त्यां, सिंहनादथी सैन्यमां हर्ष छवायो हा! ॥ १२ ॥
पणव शंख आनक अने भेरी गोमुख त्यां, सहसा वाग्यां ने थयो घोर शब्द रणमां. ॥ १३ ॥
सफेद घोडे शोभता मोटा रथवाळा, कृष्णे अर्जुने शंखने दिव्य वगाड्या त्यां. ॥ १४ ॥
पांचजन्य कृष्णे अने देवदत्त अर्जुन, पौंड्र वगाड्यो शंखने भीमे लावी धून. ॥ १५ ॥
कुंतीपुत्र युधिष्ठिरे अनंत विजय वळी, शंख वगाड्यो, शो रह्यो शब्द बधेय फरी. ॥ १६ ॥

सुघोश मणिपुष्पक ध्वनि नकुल अने सहदेव, तेम ध्वनि कैये कर्या शंखतणा स्वयमेव. ॥ १७ ॥
काशीराज विराट ने द्रुपद द्रौपदी बाल, धृष्टद्युम्न अभिमन्युए धर्या ध्वनिथी ताल. ॥ १८ ॥
खळभळावता आभ ने धरतीने स्वर ए , जाणे उर कौरव तणा चीरी पृथक् करे. ॥ १९ ॥
कौरवनी लडवा उभी सेनाने जोई, धनुष उठावीने रह्यो अर्जुन त्यां बोली. ॥ २० ॥
ऋषिकेश अच्युत हे, रथ मारो राखो, बन्ने सेना मध्यमां रथ मारो राखो. ॥ २१ ॥
लडवा उभा सर्वने लउं जरा जोई, लडवा लायक कोण छे लउं जरा जोई. ॥ २२ ॥
दुर्योधन-हित चाहता लडवा काज मळ्या, कोण कोण रणमां मळ्या जोउं आज जरा. ॥ २३ ॥
संजय कहे छे :
अर्जुनना वचनो सुणी श्रीकृष्णे जलदी, बन्ने सेना मध्यमां रथ राख्यो पकडी. ॥ २४ ॥
भीष्म द्रोण जेवा घणा राजा जेमा छे, जो कौरव सेना उभी पार्थ, बराबर ते. ॥ २५ ॥
पिता पितामह ने गुरु मामा ने भाई, पुत्र पौत्र मित्रो वळी स्नेही हितकारी. ॥ २६ ॥
एवा जोई स्वजनने करूणता धारी, बोल्यो अर्जुन शोकथी खिन्न थई वाणी. ॥ २७ ॥
ससरा तेमज स्वजनने रणमांही जोई, द्रवे नहीं एवो हशे कठोर जन कोई! ॥ २८ ॥
अंग शिथिल मारुं थतुं, वदन सुकाई जाय, शरीर कंपे, शोकथी रोमांच मने थाय. ॥ २९ ॥
धनुष हाथथी सरकतुं, दाह त्वचामां थाय, चित्त भमे, मारा थकी नाज उभा रहेवाय. ॥ ३० ॥
लक्ष्ण देखाये मने अमंगल बधां ये, स्वजनोने मार्ये नहीं मंगल कैं थाये. ॥ ३१ ॥
विजय राज्य सुख ना चहुं, कृष्ण खरेखर हुं, राज्य भोग जीवन मळे अनन्त तोये शुं! ॥ ३२ ॥
जेने माटे राज्य ने वैभव सुख चहिये, प्राण तजी रणमां उभा सुखने छोडी ते. ॥ ३३ ॥
पितृ तेम आचर्य ने पुत्र पितामह आ, ससरा मामा पौत्र ने संबंधी सघळा. ॥ ३४ ॥
त्रिलोक काजे ते हणे, हणुं न तोये हुं, पृथ्वी माटे तो पछी हणुं तेमने शुं ॥ ३५ ॥
कौरवने मार्या थकी मंगल शुं मळशे आततायीने मारतां अमने पाप थशे. ॥ ३६ ॥
बंधुजनोने मारवा छाजे ना अमने, स्वजनोने मार्ये मळे मंगल शुं अमने! ॥ ३७ ॥
लोभ थकी नासी गई बुद्धि कौरवनी, मित्र द्रोह कुलनाशनुं देखे पाप नहीं. ॥ ३८ ॥
परंतु कुलना नाशनो दोश दूर करवा, अमे चहीए केम ना जाण छतां तरवा. ॥ ३९ ॥
कुलना नाशे थायछे कुलधर्मोनो नाश, धर्म जतां कुल क्यां रह्युं, अधर्म व्यापे खाश. । ४० ।
कुलनी स्त्रीमां आवतो अधर्मथी तो दोश, संकर संतानो तेथी थये दोश. ॥ ४१ ॥
(कुलनी स्त्रीमां आवतो अधर्मथी तो दोश, संकर संतानो तेथी थये कोश. ॥ ४१ ॥)
संकर संतानो थकी कुल तो नरके जाय, श्राद्ध थाय ना पितृनुं पतन तेमनुं थाय. ॥ ४२ ॥
कुलिन संकर लोकना दोषोथी नासे, जातिकुलतणा धर्म ने दुःख सदा वासे. ॥ ४३ ॥
धर्मभ्रष्टनो नरकमां सदा थायछे वास, एम सांभळ्युं छे अमे उत्तम जनथी खास. ॥ ४४ ॥
मळ्या राज्याना लोभथी स्वजनोने हणवा, पाप कर्म ते तो खरे मळ्या अमे करवा. ॥ ४५ ॥
तेथी तो छे श्रेष्ठ के करुं सामनो ना, शस्त्र विनानो छो हणे मुजने कौरव आअ. ॥ ४६ ॥
एम कही बेसी गयो रथमां पर्थ प्रवीण, धनुष बाण मूकी दई थई शोकमां लीन. ॥ ४७ ॥

अध्याय २ : सांख्ययोग
संजय कहे छे :
आअंसु आंखोमां ने वळी हृदयमां लई शोक, बेसि गयो अर्जुन त्यां कही युद्धने फोक.

(आअंसु आंखमां ने वळी हृदयमां लई शोक, उभो रह्यो अर्जुन त्यां कही युद्धने फोक.)
कृष्णे ए अर्जुनने दीधी शीख अपार, शीखामण ते छे खरे गीताजीनो सार. ॥ १॥
अरे युद्धमां आ तने थयो केम छे शोक, मान कीर्ती ना आपतां नींदशे तने लोक. ॥ २॥
कायरताने छोड ने ऊभो था लडवा, तने छाजतुं आ नथी ऊभो था लडवा. ॥ ३॥
अर्जुन कहे छे :
केम करीने कृष्ण आ युद्ध महीं लडवुं, कहो भीष्म ने द्रोणनी साथे शें लडवुं ॥ ४॥
पूजनीय छे ए बधा, वेर केम करवुं, एथी तो उत्तम खरे भिक्षु बनी मरवुं. ॥ ५॥
लोहीभीना हाथथी राज्य भोगवुं आ, ए इच्छा मारी नथी, सत्य कहुं छुं हा! ॥ ६॥
कोनो विजय थशे अमे जाणीए ना ते, जेना विना मरण भलुं लडवा ऊभा ते. ॥ ७॥
मारुं मन मूंझायलुं करी शके ना विवेक, शिक्षा दो साची मने, तूटे न मारी टेक. ॥ ८॥
(मारुं मन मूंझायलुं करी शके ना विवेक, शिक्षा दो साची मने, तूटे न मारो टेक. ॥ ८॥)
शरणे आव्यो आज हुं, उत्तम शिक्षा दो; लडवानी इच्छा नथी, भले गमे ते हो. ॥ ९॥
स्वर्गतणुं ये राज्य जो पृथ्वी साथ मळे, दिल हणनारो शोक ना मारो तोय टळे. ॥ १०॥
संजय कहे छे :
एम कही कृष्णने महावीर अर्जुन, नहीं लडुं एवुं कही ऊभो धारी मौन. ॥ ॥
कृष्णे अर्जुनने कह्युं करतां स्मित जरी, साचे मिथ्या वातनो शोक रह्यो तुं करी. ॥ १०॥
श्री भगवान कहे छे :
पंडितना जेवुं वदे ने वळी शोक करे, पंडित जीवन मरणनो शोक कदी न करे. ॥ ॥
(पंडितना जेवुं वदे परंतु शोक करे, पंडित जीवन मरणनो शोक कदी न करे. ॥ ॥)
हुं ने तुं आ राजवी हता पहेलां ना, भविष्यमां पण ना हशे एम मानतो ना. ॥ ॥
बाल जुवान बने बधां थाय वृद्ध पण तेम, मरवुं सौने छे खरे, दुःखी थवुं तो केम! ॥ ॥
टाढ ताप सुख-दुःखने देनारा विषयो, चलायमान अनित्य छे, ते सहु भारत ओ! ॥ ॥
विषय तेम सुखदुःखथी व्यथा न जेने थाय, धीर पुरुष ते छेवटे अमृतपदमां न्हाय. ॥ १५॥
असत्य अमर कदी नथी, नथी सत्यनो नाश, तत्ववान एवी धरे शीक्षा तेनी खास. ॥ ॥
जे व्यापक सर्वत्र छे ते अविनाशी जाण, अविनाशीनो नाश ना थाय कदी ते मान. ॥ ॥
आत्मानो ना नाश छे, थाय देहनो नाश, एम समज तो ना रहे शोकतणो अवकाश. ॥ ॥
हणेल के हणनार जे आत्माने माने, आत्मा ना मारे मरे, ते जन ना जाणे. ॥ ॥
आत्मा ना जन्मे मरे, हणे नहीं न हणाय, नित्य सनातन छे कह्यो, अनादि तेम सदाय. ॥ ॥
अविनाशी अज नित्य जे आत्माने जाणे, ते कोने मारी शके मरायलां माने ॥ २१॥
जूना वस्त्र तजी धरे नवीन वश्त्रो लोक, आत्मा धरे देह तेम नवो ना कर शोक. ॥ ॥
(जूना वस्त्र तजी धरे नवीन वश्त्रो लोक, तेम देह धारे ननो आत्मा, ना कर शोक. ॥ ॥)
शस्त्रोथी छेदाय ना, अग्निथी न बळे, सूकाये ना वायुथी, जलथी ना पलळे. ॥ ॥
ना छेदाये ना बळे ना भींजाय न सुकाय, सर्वव्यापक नित्य छे, आत्मा रहे सदाय. ॥ २४॥
अविकारी अव्यक्त ने अचिन्त्य छे ते तो, एवुं जाणी ना घटे शोक कदी करवो. ॥ २५॥
जन्म मरण आत्मातणां अथवा तो तुं मान, तो पण करवो शोकना घटे तने ते जाण. ॥ ॥
जन्मे ते मरतुं सदा, मरेल जन्मे तेम, तेवो जगतनो नियम छे, शोक थाय तो केम // ॥

व्यक्त मध्यमां थाय छे, आदि अंत अव्यक्त, जीव बधा; शाने पछी थाय शोकमां रक्त ॥ ॥
अचरज पामीने जुए कोई आत्माने, अचरजथी बोले सुणे कोई आत्माने; ॥ ॥
श्रोता वक्ता सर्व ते हजारमांथी कोक, जाणी शकता आत्मने करोडमांथी कोक. ॥ २९ ॥
शरीरमां आत्मा रह्यो ते न कदी मराय, तेथी कोई जीवनो शोक करी न शकाय. ॥ ३० ॥
तारो धर्म विचार तो, शोक दूर आ थाय, धर्मयुद्धने काज छे क्षत्रियोनी काय. ॥ ॥
स्वर्ग द्वार छे युद्ध आ अनायास आव्युं; सुखी होय क्षत्रिय ते युद्ध लभे आवुं. ॥ ॥
करीश ना तुं युद्ध तो धर्म खरे चुकशे, कलंक कायरतातणु लोकोये मुकशे. ॥ ॥
अपयश करतां मोत छे खरे कह्युं सारुं, अपयशमां जीव्ये नहीं भलुं थाय तारुं. ॥ ॥
भयथी तुं नासी गयो, एम कहेशे वीर, कैं कैं लोक चलावशे वचनोना पण तीर. ॥ ३६ ॥
मान तेने जे आपता तुच्छज गणशे ते, निंदा करशे शक्तिनी, दुःख खरेखर ए. ॥ ॥
मरशे तो तुं पामशे स्वर्गतणो आनंद, राज्य पामशे जीततां, लड तो तुं सानंद. ॥ ॥
लाभहानि सुखदुःख हो, जीत मळे के हार, सरखां तेने मान ने लडवा था तैयार. ॥ ॥
कर्तव्य गणी युद्ध आ खरे लडी ले तुं, पाप तने ना लागशे, सत्य कहुं छुं हुं. ॥ ॥
ज्ञान कह्युं आ तो, हवे दउं योग उपदेश, तेए जाणी तोडशे कर्मबंध ने क्लेश. ॥ ॥
जन्मांतरमां नाश ना योगबुद्धिनो थाय, स्वल्प धर्म-आचारथी भयने पार कराय. ॥ ४० ॥
योगवृत्ति तो होय छे एक लक्ष वाळी, योगहीन बुद्दि गणां होय ध्येयवाळी. ॥ ॥
वेदवादमां रत थया कामी चंचळ लोक, जन्म मरण फल आपतां कर्म करेछे कोक. । ॥
स्वर्ग चाहता ते सदा मधुर वदे छे वाण, भोग वासनाथी गणे उत्तम कैं ना आन. ॥ ॥
भोगमहीं डूबी गयुं चंचल मन जेनुं, समाधिमां जोडाय ना मन कदिये तेनुं. ॥ ॥
त्रिगुणात्मक छे वेद तो, गुणातीत तुं था, द्वन्दरहितने शुद्ध ने ज्ञानी योगी था. ॥ ४५ ॥
कुवातणो जे हेतु ते सरोवरमांहि सरे, तेम वेदनो मर्म सौ ज्ञानमांहि मळे. ॥ ॥
कर्म करी ले, कर नहीं फळनी चिन्ता तुं, कर्म छोडजे ना कदी, शिक्षा आपुं हुं. ॥ ॥
संग तजी मन योगमां जोडी कर्म कराय, फलमां समता राख तो, समतायोग गणाय. ॥ ॥
ज्ञान विनानुं कर्म ना उत्तम छे तेथी, ज्ञानी बन, फल चाहता कृपण कह्या तेथी. ॥ ॥
पापपुण्यथी पर रहे ज्ञानी योगी तो, योगी था तुं, कर्ममां कौशल योग कह्यो. ॥ ५० ॥
ज्ञानी कर्मोना फले ममता ना राखे, जन्मबंधनथी छूटतां अमृतरस चाखे. ॥ ॥
ज्ञानथकी तुं मोहने तरी जशे ज्यारे, बाह्यज्ञान ने भोगनी विरति थशे त्यारे. ॥ ॥
बहु सुणवाथी चे थई चंचल बुद्धि ते, अचल समाधि महीं जशे, त्यारे योग थशे. ॥॥
अर्जुन कहे छे :
स्थिर बुद्धि छे जेमनी, समाधि पाम्या जे, केम रहे ते ने वदे, शे ओळखाय ते ॥ ॥
श्री भगवान कहे छे :
छोडे सघळी कामना मनमां उठती जे, आत्मनंदे मग्न छे स्थितप्रज्ञ कह्या ते. ॥ ५५ ॥
दुःख पडे तो शोक ना, सुखनी ना तृष्णा, राग क्रोध भय छे गया, ते मुनि स्थित मनना. ॥ ॥
सारुं माठुं पामतां चंचल जे ना थाय, न शोक करे के ना हसे, ज्ञानी ते ज गणाय. ॥ ॥
जेम काचबो अंगने संकोची ले छे, इंद्रियोने विषयथी ज्ञानी संकेले. ॥ ॥
विषयो जे ना भोगवे तेना विषय छुटे, रह्यो सह्यो पण स्वाद तो प्रभु पाम्ये ज छुटे. ॥ ॥

यत्न करे ज्ञानी छतां इंद्रियो बलवान, मनने खेंची जाय छे विषयोमां ते जाण. ॥ ६०॥
तेना पर संयम करी मत्पर जे जन थाय, इंद्रियो वशमां करे ज्ञानी ते जे गणाय. ॥ ॥
ध्यान धर्याथी विषयनुं संग छेवटे थाय, काम संगथी क्रोध कामथी ते पछीथी थाय. ॥ ॥
(ध्यान धर्याथी विषयनुं संग छेवटे थाय, काम संगथी क्रोध कामथी पछीथी थाय. ॥ ॥)
क्रोध थकी संमोह ने विवेकनो पण नाश, अंते बुद्धिनाश ने तेथी थाय विनाश. ॥ ॥
रागद्वेशने छोडतां विषयो सेवे जे, संयमने साधी सदा प्रसाद पामे ते. ॥ ॥
ते प्रसन्नताथी थतो सर्व दुःखनो नाश, प्रसन्नताथी थाय छे मनमां स्थिरता-वास. ॥ ॥
चंचलने बुद्धि नथी, नथी भावना तेम, भावना विना शांति ना, अशांतने सुख केम ॥ ॥
इंद्रियोनी साथमां मा पण जो जाये, नाव वायुथी तेम तो बुद्धि हरण थाये. ॥॥
तेथी जेणे इंद्रियो विषयोथी वाळी, तेनी बुद्धि थाय छे स्थिरता-सुखवाळी. ॥॥
विशयोमां ऊंघे बधां, योगी विषय-उदास, प्रभु प्रकाशथी दूर सौ, योगी प्रभुनी पास. ॥॥
समुद्र पाणीथी बने जेम कदी न अशांत, तेम कामनाथी रहे निर्विकार ने शांत. ॥ ॥
ते ज शांतिने मेळवे तृष्णा ना जेने, अहंकार ममता तजे, शांति मळे तेने. ॥ ७१॥
ब्राह्मी स्थिति आ मेळवी मोहित ना कदी थाय, मरण समे तेमां रह्यो मुक्ति मारग जाय. ॥ ७२॥

अध्याय ३ : कर्मयोग

अर्जुन कहे छे :

कर्मथकी जो श्रेष्ठ हो प्रभो, खरेखर ज्ञान, युद्धकर्ममां केम तो खेंचो मारुं ध्यान ॥ ॥
मोह पमाडो कां मने, एक कहो ने वात, एकज वात करो मने, धन्य करुं के जात. ॥ ॥

श्री भगवान कहे छे :

ज्ञानी ने योगीतणा आ संसारे बे, जुदा जुदा माअर्गो कह्या श्रेयतणा छे में. ॥ ॥
कर्म करे ज मनुष्य ना तो ना उत्तम थाय, छोडी दे जो कर्मने तोये ना शुख थाय. ॥ ॥
कर्म कर्या विण ना रहे कोई ये क्षणवार, स्वभावथी मानव करे कर्म हजारो वार. ॥ ५॥
काबु करी इंद्रियनो मनथी स्मरण करे, विषयोनुं जो मानवी, तो ते दंभ करे. ॥ ॥
मनथी संयम साधतां अनासक्त पण जे, कर्म करे इंद्रियथी, श्रेष्ठ गणाये ते. ॥ ॥
नियत कर्म कर, श्रेष्ठ छे अकर्मथी तो कर्म, अनासक्त बनतां सदा तेथी तुं कर कर्म. ॥ ॥
ब्रह्माए आ सृष्टिना आरंभे ज कह्युं, कामधेनु आअ यग्नथी सर्जो सृष्टि कह्युं. ॥ ॥
देवोनी सेवा करो, ते सेवो तमने, एकमेकनी सेवाथी मळो श्रेय तमने. ॥ ॥
प्रसन्न देवो यज्ञथी ईष्टभोग दे छे, आप्याविण जे खाय ते चोर कहे तेने. ॥ ॥
यज्ञशिष्ट खानारना पाप बधा ये जाय, एकलपेटा जे बने ते तो पाप ज खाय. ॥ ॥
प्राणी थाये अन्नथी, अन्न वृष्टिथी थाय, वृष्टि थाये यज्ञथी, यज्ञ कर्मथी थाय. ॥ ॥
कर्म थाय प्रकृतिथकी, प्रकृति प्रभुथी थाय, तेथी यज्ञे ब्रह्मनी सदा प्रतिष्ठा थाय. ॥ १५॥
चाले छे आ चक्र ते मुजब न चाले जे, मिथ्या जीवे मूर्ख ने पापी लंपट ते. ॥ ॥
आत्मामां संतोष ने आत्मरत छे जे, आत्मामां जे मग्न छे कर्म नथी तेने. ॥॥
(आत्मामां संतोष ने रतिसुख छे जेने, आत्मामां जे मग्न छे कर्म नथी तेने. ॥॥)
कर्म करीने तेमने मेळववुं ना कैं, न कर्ये कैं न गुमाववुं, मुक्त रह्या ते थै. ॥॥
आसक्ति छोडी दई योग्य करे जे कर्म, ते मंगलने मेळवे, कर तुं तेम ज कर्म. ॥॥

सिद्ध थया छे कर्मथी जनकसमा कैं लोक, लोकोना हित सारूये कर्मो न छे फोक. ॥ २०॥
उत्तम जन जे जे करे ते बीजा करता, प्रमाण तेनुं मानतां लोको अनुसरता. ॥ ॥
मारे आ संसारमां कैं ना मेळववुं, तो पण जो ने कर्ममां सदा रह्यो रत हुं. ॥ ॥
जो हुं कर्म करुं नहीं, तजे बधा तो कर्म, लोकोनुं हित थाय ना, ना सचवाये धर्म. ॥ ॥
करूं नहीं हुं कर्म तो नष्ट जगत आअ थाय, संकर्ता ने नाशनो मुजने दोष अपाय. ॥ ॥
अज्ञानी आसक्त थै कर्म करे छे जेम, ज्ञानी आसक्ति मुकी, कर्म करे सौ तेम. ॥ २५॥
अज्ञानीमां ते कदी शंका जगवे ना, कर्म करी उत्तमपणे प्रेरे जनने हा! ॥ ॥
प्रकृतिना गुणथी थतां कर्म छतां जाणे, मूढ अहंकारे गणे कर्ता पोताने. ॥ ॥
गुण ने कर्म-विभागने जे जाणे छे ते, गुण वर्ते गुणमां गणी ना आसक्त बने. ॥ ॥
प्रकृतिगुणथी मूढ ते डूबे कर्ममहीं, ए अज्ञानीने करे ज्ञानी चलित नहीं. ॥ ॥
अर्पण कर कर्मो मने, ममताने तज तुं, स्वधर्म समजी युद्धमां, पार्थ, लडी ले तुं. ॥ ३०॥
श्रद्धा राखीने मुकी ईर्षा कर्म करे, कर्मोनां बंधन बधां तेनां तुर्त टळे. ॥॥
मदथी मत्त बनी करे कर्म आम ना जे, नष्ट थयेलो जाणजे विमूढ मानव ते. ॥ ३२॥
पोतानी प्रकृति मुजब ज्ञानी कर्म करे, प्रकृति मुजब करे बधां, निग्रह केम करे ॥॥
इंद्रियोना विषयो छे रागद्वेषवाळा, शिकार तेना ना थवुं ते दुश्मन सारा. ॥॥
स्वधर्म छे उत्तम कह्यो परधर्म थकी खास, स्वधर्ममां मृत्यु भलुं, परधर्म करे नाश. ॥ ॥
युद्ध धर्म तारो खरे, त्याग भिक्षुनो धर्म, मृत्यु मळे तोये भले, कर तुं तारुं कर्म. ॥ ३५॥
अर्जुन कहे छे :
कोनाथी प्रेराईने पाप करे छे लोक, ईच्छा न होये छतां जाणे खेंचे कोक ॥ ॥
श्री भगवान कहे छे :
ईच्छा तृष्णा वासना, क्रोध कह्यो छे जे, ते ज करावे पापने, दुश्मन जनना ते. ॥ ॥
दर्पण मेलाथि, राखथी आग जेम ढंकाय, गर्भ ओरथी, कर्म सौ काम थकी ढंकाय. ॥ ॥
(दर्पण मेले, राखथी आग जेम ढंकाय, गर्भ ओरथी, कर्म सौ त्यम तेथी ढंकाय. ॥) ॥
सदा अतृप्त कामाग्नि ज्ञानीनो रिपु छे, ढांकी दे छे ज्ञानने अग्नि साचे ते. ॥ ॥
(अतृप्त अग्नि कामनो ज्ञानीनो रिपु छे, ढांकी दे छे ज्ञानने अग्नि साचे ते. ॥ ॥)
मन बुद्धि इंद्रिय छे तेना नित्य निवास, ते द्वारा मोहित करे मानवने ते खास. ॥ ४०॥
मन बुद्धि इंद्रियनो तेथी काबू करी, ज्ञान नाश करनार ते काम नाख हरी. ॥ ॥
(मन बुद्धि इंद्रियनो तेथी काबू करी, ज्ञान नाश करनार ते पापी नाख हरी. ॥ ॥)
इंद्रियो बळवान छे, मन तेथी बळवान, मनथी बुद्धि श्रेष्ठ छे, आत्मा उत्तम जाण. ॥॥
आत्माने उत्तम गणी, आत्मशक्ति धारी, कामरूप आ शत्रुने शीघ्र नाख मारी. ॥ ४३॥

अध्याय ४ : कर्मब्रह्मार्पणयोग
श्री भगवान कहे छे :
विवस्वानने योग आ पहेलां कह्यो में, मनुने कह्यो तेमणे, इक्ष्वाकुने मनुए. ॥ ॥
(विवस्वानने योग आ पहेलां कह्यो में, मनुने कथियो तेमणे, इक्ष्वाकुने मनुए. ॥ ॥)
परंपराथी जाणता राजर्षि आ योग, काळ जवाथी ते खरे नष्ट थयो छे ते योग. ॥ ॥
रहस्यवाळो योग ते तुजने पार्थ, कह्यो, भक्त तेम मानी सखा उत्तम योग कह्यो. ॥ ॥

अर्जुन कहे छे :
विवस्वान पूर्वे थया, तमे थया हमणा, योग तमे क्यांथी कह्यो, थाय मने भ्रमणा. ॥ ॥
श्री भगवान कहे छे :
मारा ने तारा खरे जन्म अनेक थया, मने याद ते सर्व छे, तने न याद रह्या. ॥ ५ ॥
छुं जगस्वामी अज छतां जन्म लउं छुं हुं, प्रकृतिना आधारथी प्रकट थउं छुं हुं ॥ ॥
ज्यारे ज्यारे धर्मनो थई जाय छे नाश, अधर्म व्यापे ते समे जन्म लउं छुं खास. ॥ ॥
रक्षुं सज्जनने अने करुं दुष्टनो नाश, स्थापुं साचा धर्मने पूरुं भक्तनी आश. ॥ ॥
दिव्य जन्म ने कर्मने मारा जाणे जे, मरण पछी जन्मे नहीं, मने मेळवे ते. ॥॥
भय ने क्रोध तजी दई, करीने मने प्रेम, तप ने ज्ञानथकी घणा पाम्या मुजने तेम. ॥ १० ॥
जेवा भाव थकी मने भक्त भजे मारा, तेवा भावे हुं भजुं ते सौने प्यारा! ॥ ॥
सर्व प्रकारे मानवी मुज मार्गे चाले, मंगल तेनु थाय जे मुज मार्गे चाले. ॥ ११ ॥
बीजा देवोने भजे प्रेम करीने जे, साचे सिद्धि पामता पूजी तेमने ते. ॥ ॥
चार वर्ण में सर्जिया गुण कर्म अनुसार, तेनो कर्ता हुं छतां अकर्ता मने जाण. ॥ ॥
(चार वर्ण में सर्जिया गुण ने कर्मे मान, तेनो कर्ता हुं छतां अकर्ता मने जाण. ॥ ॥)
मने कर्म बंधन नथी, नथी कर्म ममता, मानव समजे एम ते कर्म थकी छुटता. ॥ ॥
एवुं जाणीने कर्या पहेलां कैंये कर्म, एमज करजे कर्म तो सचवाशे तुज धर्म. ॥ ॥
अकर्म तेमज कर्ममां मोहाया विद्वान, कर्म कहुं जेथी रहे नहीं अशुभमां ध्यान. ॥ ॥
कर्म अकर्म विकर्मनो योग्य जाणवो मर्म, कर्म रहस्य पिछानवुं, गहन खरे छे कर्म. ॥ ॥
अकर्म देखे कर्ममां कर्म अकर्मे जे, उत्तम कर्मी ते कह्या, ज्ञानी सौमां ते. ॥ ॥
फळनी तृष्णा त्यागतां कर्म करे छे जे, देह ज्ञानथी कर्मने, पंडित साचे ते. ॥ ॥
आसक्तिने छोडतां नित्य तृप्त ज्यम जे, कर्म करे छे मानवी, करे कैं नहीं ते. ॥ २० ॥
तृष्णा संग्रह छोडतां, मननो काबु करी, शरीरकर्म कर्या तकी थाये पाप नहीं. ॥ ॥
लाभालाभे तृप्त जे द्वन्दातीत सदाय, कर्मने करे तोय ते ना बंधाय कदाय. ॥॥
संगरहित ने मुक्त छे ज्ञान परायण जे, कर्म यज्ञ भावे करे, कर्म न बांधे ते. ॥॥
अग्नि ने समिधा वळी हविये ब्रह्मस्वरूप, कर्म ब्रह्ममय तेमने जे छे ज्ञानस्वरूप. ॥॥
देवयज्ञ कोई करे योगीजन जगमां, ब्रह्माग्निमां यज्ञने अन्य करे जगमां. ॥ २५ ॥
संयमना अग्निमहीं ईद्रियो बाळे, कोई ईद्रियोमहीं विषयोने बाळे. ॥ ॥
ज्ञान भरेला आत्मनो संयममय अग्नि, कोई होमे प्राणने जगवी ए अग्नि. ॥ ॥
द्रव्ययज्ञ, तपयज्ञ ने योगयज्ञ पण थाय, ज्ञानयज्ञ कोई करे, व्रत तीक्ष्ण घणां थाय. ॥ ॥
प्राणायमी प्राणने अपानमां होमे, प्राण रोकता, प्राणमां अपानने होमे. ॥ ॥
काबु करी आहारनो होमे प्राणे प्राण, यज्ञ जाणता; यज्ञथी पवित्र सौने जाण. ॥ ३० ॥
यज्ञामृत खानारने ईष्वरप्राप्ति थाय, यज्ञहीनने आअ जगे पछीय सुख न थाय. ॥ ॥
ब्रह्माए आवी रीते अनेक यज्ञ कह्या, कर्मजन्य ते जाण तो पाप थशे न कदा. ॥ ॥
द्रव्ययज्ञथी ज्ञाननो यज्ञ श्रेष्ठ तुं जाण, कर्म बधांये ज्ञानमां पूर्ण थाय ते मान. ॥ ॥
अनुभववाळो होय जे ज्ञानी तेमज होय, तेए नमतां सेवतां पूछ प्रश्न तुं कोय. ॥ ॥
ज्ञान तने ते आपशे, तेथी मोह जशे, जग आखुं मुजमां पछी जोशे आत्म विशे. ॥ ३५ ॥

पापीमां पापी हशे कोई आअ जगमां, ज्ञाननावमां बेसतां तरी जशे भवमां. ॥ ॥
भस्म करे छे काष्टने बाळी अग्नि जेम, ज्ञानग्नि कर्मो बधां भस्म करे छे तेम. ॥ ॥
ज्ञानसमुं कैंये नथी पवित्र आ जगमांह्य, समय जतां ते मेळवे ज्ञानी अंतरमांह्य. ।
श्रद्धा ने संयम वळी लगनी खूब हशे, जरुर मळशे ज्ञान तो, शांति पण मळशे. ॥॥
(श्रद्धा ने संयम वळी लगनी खूब हशे, जरुर मळशे ज्ञान तो, शांति वळी मळशे. ॥॥)
अविश्वास शंका हशे तो ते नष्ट थशे, आ जगमां तेने नहीं कोई सुख थशे. ॥ ४०॥
(अविश्वास शंका हशे तो ते नष्ट थशे, आ जगमां तेने नहीं कोई सुख धरशे. ॥ ४०॥)
शंका छोडी जेमणे तज्युं वळी अभिमान, तेने बांधे कर्म ना, थयुं जेमने ज्ञान. ॥ ॥
एथी आ अज्ञानथी मोह थयो तुजने, ज्ञानखडगथी छेदतां लड तुं मुक्त मने. ॥ ४२॥

अध्याय ५ : कर्मस/न्यासयोग

अर्जुन कहे छे :

वखाणो तमे कर्मने तेमज कर्मत्याग, बन्नेमां जे श्रेष्ठ हो कहो ते मने मार्ग. ॥ ॥

श्री भगवान कहे छे :

कर्मत्याग ने कर्म ते बन्ने मंगल जाण, कर्मत्यागथी कर्म छे उत्तम एम प्रमाण. ॥ ॥
जेनामां ना वेर छे तेने त्यागी मान, आशा तृष्णा छे नहीं ते सन्यासी जाण. ॥ ॥
द्वन्दथकी छूटी शके ते मुक्ति पामे, सहज शांति तेने मळे दुःख वळी वामे. ॥ ॥
ज्ञानकर्मने पंडितो गणे नहीं अळगा, फळ बन्नेनां एक छे, अज्ञ गणे अळगां. ॥ ॥
मळे ज्ञानथी स्थान ते कर्म थकीय मळे, तेथी तेमां ना कदी ज्ञानी भेद करे. ॥ ५॥
खाली कर्म तजवा थकी थाय नहीं सन्यास, कर्म करे जे थाय ते समये त्यागी खास. ॥ ॥
(कर्म करे ना तो पछी थाय नहीं सन्यास, कर्म करे जे थाय ते समये त्यागी खास. ॥ ॥)
पवित्र योगी संयमी समदर्शी छे जे; कर्म करे तोये कदी लिप्त बने ना ते. ॥ ॥
जोतां, सुणतां, सुंघतां, खातां ने वदतां, सुतां उठतां बेसतां, श्वासक्रिया करतां. ॥ ॥
हुं कैये करतो नथी ज्ञानी एम गणे, ईंद्रियो विषयोमहीं वर्ते एम गणे. ॥ ॥
प्रभुने अर्पी ने तजी अहम् करे जे कर्म, तेने पाप अडे नहीं, व्यापे नहीं अधर्म. ॥ १०॥
काया मन बुद्धि थकी, फक्त ईन्द्रियोथी, शुद्धिकाज कर्मो करे योगी संग तजी. ॥ ॥
फळनी तृष्णा छोडतां शांति लभे ज्ञानी, फळमां बद्ध बनी जता कामी अज्ञानी. ॥ ॥
मनती कर्म तजी, रही नवद्वारे नगरे, कर्म करावे ना कदी आत्मा न कर्म करे. ॥ ॥
(मनती कर्म तजी, रही नवद्वारे नगरे, कर्म करावे ना कदी आत्मा कर्म करे. ॥ ॥)
कर्म अने कर्तृत्व ने कर्मफलतणो योग, प्रभु करे नहीं; ए बधो प्रकृतिनो छे भोग. ॥॥
पाप पुण्य कोईतणु ईश्वर ना खाये, जीव भर्या अज्ञानथी तेथी मोहाये. ॥१५॥
ज्ञानथकी जेणे हण्युं पोतानुं अज्ञान, सुरज जेम तेना महीं प्रकाशी रहे ज्ञान. ॥ ॥
मन बुद्धि निष्ठा रहे जेनी ते प्रभुमां, ज्ञान-पवित्र फरी न ते जन्मे छे जगमां. ॥।
ब्राह्मण हाथी गाय ने पंडित मूरखमां, ज्ञानी ईश्वरने जुए जड ने चेतनमां. ॥॥
जीवतांज जग जीतियुं समतावान जने, ब्रह्म जेम निर्दोष ते ब्रह्ममां ज स्थित छे. ॥ ॥
प्रिय पामी हरखाय ना, अप्रियथी न रडे, स्थिर ने ज्ञानी ब्रह्मथी थाय अभिन्न ते. ॥ ॥
अनासक्त विषयोथकी जे सुखने पामे, सुख अक्षय ते ब्रह्ममां स्थित योगी पामे. ॥ ॥

स्पर्शजन्य भोगो बधा आदि अने अंते, दुःख आपता, तेमहीं ज्ञानी ना ज रमे. ॥ ॥
देह त्याग पहेलां ज जे काम क्रोधना वेग, सहन करे ते श्रेष्ठ छे, सुखी थाय छे तेज. ॥ ॥
आत्मानुं सुख मेळवे, आत्मामां आराम, ते मुक्तिने मेळवे, रहे न कां$_I$ kAm. .. ..
जीवोनी सेवा करे, दोष करे जे दूर, ते मुक्तिने मेळवे, पडे न मायापूर. ॥ २५ ॥
काम क्रोध जीते, करे मननो संयम जे, भय छोडे जे, मेळवी मुक्तिने ले ते. ॥॥
भ्रमर मध्य दृष्टि करी स्थिर रोकतां प्राण, विषयोने अळगा करी धरे न जगनुं ध्यान;
भय ने क्रोध तजे, करे मननो संयम जे, मोक्षपरायण थाय जे, मुक्त गणाये ते.
जीवमात्रनो मित्र ने सृष्टिनो स्वामी, जाणे मुजने ते खरे शांति जाय पामी. ॥ २९ ॥

अध्याय ६ : आत्मसंयमयोग

श्री भगवान कहे छे :

फलनो आश्रय छोडतांकर्म करेछे जे, सन्यासी ते छे खरो, योगीजन पण ते.॥ ॥
अग्निने अडके नहीं, कर्म करे ना तोय, माया ममता होय तो त्यागी थाय ना कोय. ॥ १ ॥
योग अने सन्यास बे अलग खरेज नथी, छोडे ना संकल्प ते योगी थाय नहीं. ॥ ॥
योग-साधना काज तो साधन कर्म मनाय, शमना साधनथी पछी योगारूढ थवाय. ॥ ॥
ईन्द्रियोना विषयनी ममता छूटी जाय, संकल्प मटे ते पछी योगारूढ गणाय. ॥ ॥
करवुं पतन न जातनुं, करवो नित उद्धार, पोते शत्रु मित्र ने पोताना रखवाळ. ॥ ५ ॥
जे मनने जीते सदा, मित्र बने छे ते, पोतानो शत्रु बने मन ना जीते जे. ॥ ॥
जात उपर संयम करीले छे जे योगी, शांत होय ते, होयछे प्रभु-रसनो भोगी. ॥ ॥
टाढ ताप सुखदुःख ने मान तेम अपमान, चलित करे जेने न ते योगी उत्तम जाण. ॥ ॥
पत्थर सोनुं मृत्तिका तेने सरखां होय, तृप्त ज्ञान-विज्ञानमां साक्षी जेवो स्होय. ॥
मित्र शत्रु मध्यस्थ के बंधु स्नेहीमां, समबुद्धि छे ते कह्यो उत्तम योगी हा! ॥
एकंतमहीं बेसवुं योगीए हररोज, तृष्णा ने संग्रह तजी करवी अंतर खोज. ॥ १० ॥
संयम जाततणो करी एकला ज रेवुं; पवित्र स्थाने दृढ करी आसनने देवुं. ॥ ॥
ईन्द्रियो मन वश करी, मन एकाग्र करी, आत्म शोधवा योगने करवो शांति धरी. ॥ ॥
काया मस्तक डोकने करवां सरखां स्थिर, नासिकाग्रने देखवुं, धरी चित्तमां धीर. ॥ १३ ॥
स्थिरता राखी, भय तजी, ब्रह्मचर्य पाळी, मन मारामां जोडवुं बीजेथी वाळी. ॥
संयमथी अभ्यासने आम करे छे जे, परम शांति मुजमां रही प्राप्त करे छे ते. ॥ १५ ॥
उपवासी रेवुं नहीं, खावुं ना पण खूब, उजागरा करवा नहीं, ऊंघवुं नहीं खूब. ॥ ॥
योग्य करे आहार ने विहार तेमज कर्म, जागे ऊंघे योग्य ते लभे योगनो मर्म. ॥
चित्त थाय वश ने पछी आत्मामां स्थिर थाय, निःस्पृह योगी थाय ते योग युक्त गणाय. ॥
(चित्त थाय वश ने पछी आत्मामां स्थिर थाय, निःस्पृह योगी थाय ते योगी युक्त गणाय. ॥)
हवा विनाना स्थानमां दिवोओ ना हाले, तेवुं मन योगी तणुं चळे ने को काळे. ॥ ॥
योगीजनना चित्तनो पूरो संयम थाय, डूबी जाये ध्यानमां, त्यारे रसमां न्हाय. ॥ २० ॥
आत्मानो अनुभव करी आनंदमहीं न्हाय, बुद्धि ने ईन्द्रियथी अतीत सुखमां न्हाय्. ॥ ॥
तेनाथी कोई नथी बीजो उत्तम लाभ, तेने पामी ना चळे पडे भले ने आभ. ॥॥
दुःख मटी जये बधुं, तेने योग कह्यो, मनने मजबूत राखतां करवो ते ज रह्यो. ॥ ॥

संकल्पथकी कामना थाये ते टाळे, ईन्द्रियो मनथी बधी संयममां धारे. ॥॥
धीरे धीरे बुद्धिने करे पछी उपराम, विचार न करे, मन करी स्थिर ने आत्माराम. ॥ २५ ॥
मन आ चंचळ जाय छे अनेक विषयो मांथ्य, वाळी पाछुं जोडवुं तेने आत्मा मांथ्य. ॥ ॥
करतां एम थई जशे मन आत्मामां शांत, सुख उत्तम त्यारे थशे, दोष थशे सौ शांत. ॥ ॥
रोज करे छे योग आ ते तो निर्मल थाय, ब्रह्मप्राप्तिसुख पूर्ण ते पामी तेमां न्हाय. ॥ ॥
आत्माने सौ जीवमां आत्मामां सौ जीव, योगी जुए हंमेश ए समदर्शीनी रीत.
जे मुजने सघळे जुए, ने मारामां सर्व, तेनाथी ना दूर हुं, ते ना मुजथी दूर. ॥ ३० ॥
रहेल सर्वे जीवमां मने भजे छे जे, वर्ते सर्वपणे भले, मुजमां वर्ते ते. ॥ ॥
आत्मा जुए सौमां अने अनुभव करे समान, जाणे परनी पीड ते योगी मान महान. ॥ ॥
अर्जुन कहे छे :
समतानो आ योग जे कह्यो तमे प्रभु हे, चंचलताने कारणे अशक्य लागे ते. ॥॥
मन चंचल बळवान छे जक्की तेमज खूब, वायु सम मुश्केल छे तेनो संयम खूब. ॥ ॥
(मन चंचल बळवान छे जक्की तेमज खूब, वायु जेम मुश्केल छे तेनो संयम खूब. ॥ ॥)
श्री भगवान कहे छे :
मनने चंचल चे कह्युं, ते छे सत्य खरे, प्रयत्न ने वैराग्यथी योगी काबू करे. ॥ ३५ ॥
असंयमीने योग तो लागे बहु मुश्केल, संयमशीलने प्रयत्नथी लागे ते तो शेल. ॥॥
(असंयमीने योग तो मुश्केल कह्यो छे, संयमशील प्रयत्नथी प्राअप्त करे छे ते. ॥॥)
अर्जुन कहे छे :
असंयमी श्रद्धाभर्यो चलित योगथी थाय, योगसिद्धि ना पामतां तेई ही गती थाय ॥॥
छिन्नभिन्न वादळसमो विनाश तेनो थाय ब्रह्मप्रतिष्ठाहीन ते विमूढनुं शुं थाय ॥ ॥
पूर्णपणे मारी तमे शंका दूर करो, अन्य कोण हरशे न जो, शंका तमे हरो ॥ ॥
श्री भगवान कहे छे :
आ लोके परलोकमां नाश न ते पामे, मंगलकर्ता ना कदी दुर्गतिने पामे. ॥ ४० ॥
पुण्य भरेला लोकने ते योगी पावे, पछी पवित्र घरोमहीं जन्म लई आवे. ॥ ॥
ज्ञानी योगीना कुले अथवा जन्म धरे, दुर्लभ जगमां कोकने आवो जन्म मळे. ॥ ॥
पूर्वजन्मना जागता त्यां पण सौ संस्कार, यत्न करे योगी वळी भवने करवा पार. ॥ ४३ ॥
पूर्व जन्मसंस्कारथी अवश्य योग करे, योगेच्छाथी तत्त्व ते उत्तम प्राप्त करे. ॥ ॥
प्रयत्न खूब कर्या थकी मेल हृदयना जाय, एम घणा जन्मे पछी सिद्ध योगमां थाय. ॥ ४५ ॥
ज्ञानी तपसीथी कह्यो योगी उत्तम में, कर्मीथी छे श्रेष्ठ तो, योगी तुं य थजे. ॥ ॥
मारामां मन जोडतां, करी वळी विश्वास, भजे मने दिनरात ते उत्तम योगी खास. ॥ ४७ ॥

अध्याय ७ : ज्ञानविज्ञानयोग
श्री भगवान कहे छे :
मारामां आसक्त थई आश्रय मारो ले, जाणे मुजने केम तेहवे कहुं छुं ते. ॥ १ ॥
ज्ञान कहुं तुनजे वळी पूर्ण कहुं विज्ञान, जेने जाणी जाणवुं रहे कै ना आन. ॥ २ ॥
हजारमां कोई करे सिद्धिकाज प्रयास, करतां यत्न हजारमां कोई पहोंचे पास. ॥ ॥
मारी पासे पहोंचतां कोई पामे ज्ञान, सांभळ, जो तुजने कहुं उत्तम मारुं ज्ञान. ॥ ३ ॥

पृथ्वी पाणी तेज ने वायु चित्त आकाश, अहंकार बुद्धि कही मारी प्रकृति आठ. ॥ ॥
(पृथ्वी पाणी तेज ने वायु चित्त आकाश, अहंकार बुद्धि कही मारी प्रकृति खास. ॥ ॥)
बीजी जीवरूपे रही छे मारी प्रकृति, तेनाथी जगने रचुं, ते उत्तम प्रकृति. ॥ ५ ॥
आ बन्ने प्रकृतिथकी प्राणी सर्वे थाय, सर्जन तेम विनाशनुं स्थान मने सौ गाय. ॥ ॥
उत्तम मुजथी को नथी, माराविण कैं ना, जग मुजमां छे, जेम आ मणका दोरामां.
पाणीमां रस हुं थयो, सूर्यचन्द्रमां तेज, वेदमहीं ॐकार छुं, पौरुष नरमां सहेज. ॥ ॥
पृथ्वीमां छुं गंध ने तप छुं तापसमां, जीवन प्राणीमात्रनुं, शब्द तयो नभमां. ॥ ॥
बीज सर्व प्राणीतणुं मने सदाये जाण, बुद्धि तेमज वीरता वीरलोकमां मान. ॥ १० ॥
बळ बनतां सेवा करुं बळवानोमां हुं, अधर्मथी पर काम्ना जीवमात्रमां छुं. ॥॥
सत्व अने रजतमतणा उपजे मुजथी भाव, ते मुजमां छे, हुं नथी ते भावोनी माह्य. ॥ ॥
त्रण गुणवाळी छे कही मारी जे माया, तेनाथी मोहित थया रंक अने राया. ॥ ॥
माया छे मारी खरे तरवी आअ मुश्केल, तरी जाय छे ते ज जे मारुं शरण ग्रहेल. ॥ ॥
मूढ मने पामे नहीं अधर्मथी भरिया, मानवरूपे ते फरे तोय जाण मरिया. ॥ १५ ॥
दुःखी तेमज ज्ञाननी इच्छावाळा लोक, संसारी आशाभर्या, ज्ञानी तेमज कोक. ॥ ॥
चार जातना मानवी मने भजे छे ते, तेमां ज्ञानी भक्तने श्रेष्ठ कह्यो छे में. ॥ ॥
महान छे बीजा छतां ज्ञानी मारो प्राण; ज्ञानी संधाई गयो मारी साथे जाण. ॥ ॥
घणाय जन्म पछी मने ज्ञानी पामे छे; प्रभु पेखे जगमां बधे, संत सुदुर्लभ ते. ॥ ॥
कामनाभर्या कैं जनो नियम घणा पाळी, अन्य देवताने भजे, स्वभावने धारी. ॥ २० ॥
श्रद्धापूर्वक देवने भक्त भजे छे जे, तेनी श्रद्धा हुं करुं दृढ देवमहीं ते. ॥ ॥
श्रद्धापूर्वक ते पछी तेनी भक्ति करे, मारी द्वारा कामना-फळने प्राप्त करे. ॥॥
अल्पबुद्धि ए भक्तना फळनो थाय विनाश, देव भज्ये देवो मळे, मने भज्ये मुज पास. ॥॥
अज्ञानी मुज रूपनी मर्यादा माने, विराट उतम रूप ना मारुं ते जाणे. ॥ ॥
मायाथी ढंकायेलुं मारुं पूर्ण स्वरूप, मूढ ओळखे ना कदी मारुं दिव्य स्वरूप. ॥ २५ ॥
भूतभावि जाणुं, वळी वर्तमान जाणु, जाणुं हुं सौने, मने कोई ना जाण्युं. ॥ ॥
वेर झेर तृष्णाथकी भवमां भटके लोक, जेना पाप टळी गया भजे मने ते कोक. ॥ ॥
मोतथकी छुटवा वळी घडपणने हरवा, भजे शरण मरुं लई दुःख दूर करवा. ॥ ॥
दृढ निरधार करे अने द्वन्दमुक्त ते थाय, पुण्यवान ते तो मने जाणी रसमां न्हाय. ॥ ॥
ब्रह्मकर्म अध्यात्म ने अधिभूत ने अधियज्ञ, जे जाणे ते थाय छे मारामां संलग्न. ॥ ३० ॥

अध्याय ८ : अक्षरब्रह्मयोग

अर्जुन कहे छे :

ब्रह्म वळी अध्यात्म शुं, कर्म कहे कोने, अधिभूत ने अधिदैव हे प्रभो, कहे कोने ॥ ॥
मृत्यु आवे ते समे योगीजन तमने, केम करी जाणी शके, कहो कृपाळु, मने. ॥ ॥

श्री भगवान कहे छे :

अक्षर छे परब्रह्म ने स्वभाव छे अध्यात्म, जगसर्जन ने नाशनो व्यापार कहे छे कर्म. ॥ ॥
क्षर ते छे अधिभूत ने पुरुष कह्यो अधिदैव, अधियज्ञ कह्यो छे मने शरीरमांनो देव. ॥॥
याद करी प्रेमे मने जे छोडे छे देह, ते पामी ले छे मने, तेमां ना संदेह. ॥॥

जेने याद करी तजे मृत्यु समजे देह, तेने पामे जीव आअ, तेमां ना संदेह. ॥ ॥
तेथी रातदिवस मने याद करी लडजे, मन मारामां राखजे, मुजने मेळवजे. ॥ ॥
योगीजन अभ्यासथी प्रभुमां मन जोडे, प्रभुने पामी ले वडी ज्यारे तन छोडे. ॥ ॥
ज्ञानी तेम अनादी ते सौना स्वामी छे, प्रभुजी पूर्ण प्रकाश ने अनंतनामी छे. ॥ ॥
अंतसमे तेने करे याद प्रेमथी जे, मनने जोडे तेमहीं, पामे प्रभुने ते. ॥ १० ॥
वेद कहे अविनाशी ने मुनि जेने जाणे, जेने माटे कैं करे ब्रह्मचर्य ध्याने; ॥ ॥
मन अंतरमां रोकतां द्वार बधा रोकी, योगी राखे प्राणने मस्तकमां रोकी. ॥ ॥
पछी जपे छे प्रणवने, ध्यान धरे मारुं, एम तजे छे देह ते पामे गती चारुं. ॥ ॥
सदा करे छे याद जे मुजने प्रेम करी, ते जे मेळवे छे मने, जगने जाय तरी. ॥ ॥
मने मेळवीने फरी जन्मे ना कोई, दुःख शोक के व्याधिमां पडे नहीं कोई. ॥ १५ ॥
ब्रह्मलोक ने लोक सौ बीजा कैंक कह्या, तेमां जन्ममरण थतां, ते ना अमर गण्या. ॥ ॥
मने ज मेळववाथकी अमर बने छे लोक, जन्ममरण साचे टळे, टळे ताप ने शोक. ॥ ॥
चार जातना युग कह्या, ते असु साथ मळे, हजार युग ब्रह्मातणो एक जदिवस करे. ॥ ॥
तेवी रात बने वळी आ ब्रह्मांड विशे, दिवसे जीवो जन्मता, मरता रात विशे. ॥॥
जीव बध जन्मे वळी प्रलय तेअनो थय, प्रकट थाय दिवसे अने राते छेक समाय. ॥॥
तेथी उत्तम चे कह्या प्रभु सौना स्वामी, प्रलयमांय ते न मरे प्रभु अनंतनामी. ॥ २० ॥
अविनाशी ते ईश छे, परमधाम पण ते, तेने पामी न फरे पाछुं कोई ये. ॥॥
उत्तम भक्ति होय तो ते प्रभु दर्शन दे, जग जेअमां छे रह्युं, व्यापक सघळे ते. ॥ ॥
ज्यारे मरतां न कदी जन्मे योगीजन, जन्मे ते वेळा कहुं, सांभळ राखी मन. ॥ ॥
अग्नि, ज्योति, दिवस ने शुक्लपक्ष जो होय, उत्तरायणे तन तजे, ते प्रभु पामे कोय. ॥ ॥
धुम्र, रात, वद होय ने दक्षिणायन जो, चंद्रलोकने मेळवी फरी जन्मता तो. ॥ २५ ॥
शुक्लकृष्णनी आ गती शाश्वत छे आ जगमां, जन्म थाय छे एकथी, ना जन्मे परमां. ॥ ॥
आअ जाणी योगी कदी मोहित नहीं थशे, तेथी सर्व काळमां योगी तुं बनजे. ॥ ॥
वेदयज्ञ तपदाननुं पुण्य कह्युं छे जे, योगी पदने मेळवे तेथी उत्तम ते. ॥ २८ ॥

अध्याय ९ : राजविद्याराजगुह्ययोग

श्री भगवान कहे छे :

खूब ज छूपुं ज्ञान ने वळी कह्युं विज्ञान, मुक्त करे जे अशुभथी, कहुं हवे ते ज्ञान. ॥ ॥
पवित्र ने सुखकर कही उत्तम विद्या ते, अनुभव करवा योग्य ने उत्तम विद्या छे. ॥ ॥
माने ना आ धर्मने, श्रद्धा ना राखे, मरे जन्म ले ते, नहीं मुक्तिरस चाखे. ॥ ॥
अखंड मारुं रूप आ जगमां व्यापक छे, मारामां जीवो बधा खरे रहेला छे. ॥ ॥
मारा अंशे ए रह्या, पूर्णरूपमां ना, जीव रह्या मुजमां छतां हुं लेपाउं ना. ॥ ५ ॥
वायु वहेनारो बधे रहे व्योममां जेम, चराचर रहे मुजमहीं समजी लेजे एम. ॥ ॥
कल्पान्ते मारामहीं लय सौनो ये थाय, कल्पारंभे मुजथकी सर्जन सौनुं थाय. ॥ ॥
प्रकृतिनो आश्रय लई सर्जुं वारंवार, जीव बधा आ जगतमां सर्जुं वारंवार. ॥ ॥
ए सर्वे कर्मो मने बंधन ना करता, उदासीन निर्लेप हुं रहुं कर्म करतां. ॥ ॥
मारा हाथ तळे रही प्रकृति जगत करे, तेथी जगमां थाय छे परिवर्तन सघळे. ॥ १० ॥

मनुष्यरूपे हुं रह्यो एम मूढ जाणे, विराट मारा रूपने ना कदी परमाणे. ॥ ॥
मूढ जनोओनां कर्म ने विचार मेला होय, स्वभाव हलको तेमनो, संसारे रत होय. ॥॥
ज्ञान कर्म आशातणुं फळ ते ना पामे, मोहमही प्रकृतिथकी संकट ना वामे. ॥ ॥
पवित्र दिव्य स्वभावना महात्माजनो कोक, भावथकी भजता मने पामी मृत्युलोक. ॥ ॥
मारुं कीर्तन ते करे, यत्न करे मुजकाज, नमे मने, पाळे वळी नियमो मारेकाज. ॥ ॥
द्वैत तेम अद्वैत ने विश्वभावनाथी, मानीने भजता मने कैंये ज्ञानथकी. ॥ १५ ॥
ऋतु ने यज्ञ स्वधा वळी औषध ने धृत छुं, मंत्र हवन अग्नि बनी वास करुं छुं हुं. ॥ ॥
आ जगनो छुं हुं पिता, माता धाता छुं, वेद तेम ॐकार ने गति ने भर्ता छुं. ॥ ॥
शरण, सर्वनो मित्र ने सौनुं कारण छुं, गति, भर्ता, साक्षी वळी अविनाशी प्रभु छुं. ॥ ॥
हुं वरसाद करुं वळी ताप तपावुं छुं, सुधारूप ने सत्य छुं, मृत्युनो पति छुं. ॥ ॥
यज्ञ करे जे प्रेमथी ते जन स्वर्गे जाय, पुण्यथकी दैवी घणा भोगे स्वर्गे न्हाय. ॥ २० ॥
पुण्यथाय पूरुं पछी जन्मे पृथ्वीमांह्य, आवागमनथकी ते न छूटे छे जगमांह्य. ॥ ॥
दर्शन मारुं ना करे त्यांलग मुक्त न थाय, कोई सुख ने दुःखथी कदी न छूटी जाय. ॥॥
मारुं शरण लई करे मारुं चिंतन जे, तेना कोड बधा पूरुं, रक्षुं छुं तेए. ॥॥
(मारुं शरण लई करे मारि चिंता जे, तेना कोड बधा पूरुं, रक्षुं छुं तेए. ॥॥)
अन्य देवने जे भजे, मने ज भजता ते, सर्व जातना यज्ञनो स्वामी जाण मने. ॥॥
मने ज जाणवाथी ज ना अवगतिने पामे, मने न जाणे ते सदा दुर्गतिने पामे. ॥॥
देव भज्ये देवो मळे, पितृ भज्ये पितृ, भूतोथी भूतो मळे, मने भजे मळुं हुं. ॥ २५ ॥
फळ के फूल मने धरे, पर्ण तेम पाणी, धर्युं भावथी सर्व हुं आरोओगुं राजी. ॥ ॥
(फळ के फूल मने धरे, पर्ण तेम पाणी, धर्युं भावथी सर्व हुं आरोओगुं दानी. ॥ ॥)
तेथी तुं जे जे करे, तपे, दान दे, खाय, करजे अर्पण ते मने, अहंभाव ना थाय. ॥ ॥
सारांनरसां कर्मथी एम ज तुं छुटशे, त्याग योगथी ने मने प्राप्त करी चुकशे. ॥ ॥
मारे शत्रुमित्रना, सौये सरखा छे, भजे भावथी ते छतां नजीक अदकां छे. ॥ ॥
खूब अधर्मीये मने भजे करीने प्रेम, तो ते संत थई जशे पामी मारी रेम. ॥ ॥
शांति पूर्ण ते पामशे, धर्मात्मा बनशे, मारो भक्त कदी नहीं अर्जुन नष्ट थशे. ॥ ॥
पापी, स्त्री ने शुद्रये गुण मारा गाशे, लेशे मारुं शरण तो उत्तम गति थाशे. ॥ ॥
पछी भक्त ब्राह्मण अने ज्ञानीनुं तो शुं, जन्मीने आ जगतमां मने भजी ले तुं. ॥ ॥
मनथी भज मुजए अने तनथी कर सेवा, कर्म मने अर्पण करी माणी ले मेवा. ॥ ॥
जगमां जोईने मने वंदन कर हररोज, मने पामशे एम तुं करतां मारी खोज. ॥ ॥
मन वाणीथी भक्त था मारो केवळ तुं, शांति तेम सुख पामशे, सत्य कहुं छुं हुं. ॥ ३४ ॥

अध्याय १० : विभूतियोग

श्री भगवान कहे छे :

फरीवार अर्जुन, तुं सुण वचनो मारां, तारा हित माटे कहुं वचनो ते प्यारा. ॥ ॥
जन्म न मारो जाणता महर्षि अने देव, आदि देव ने ऋशितणो जाणी मुजने सेव. ॥ ॥
लोकोनो ईश्वर मने जे कोई जाणे, दुःखदर्दथी ते छुटी मुक्तिरस माणे. ॥ ॥
क्षमा सत्य बुद्धि वळी शमदम तेमज ज्ञान, सुख दुःख भय ने अभय, सत्यासत्य प्रमाण. ॥ ॥

तप ने समता ने दया, यश अपयश ने दान, भाव थता प्राणीतणा ते सौ मुजथी जाण. ॥ ५ ॥
सात महर्षि ने वळी चार जातना ते, मनु माराथी छे थया, पिता जगतना जे. ॥ ॥
विभुति तेमज योग आ मारो जाणे जे, जोडाये दृढ योगथी मारी साथे ते. ॥ ॥
सौनो हुं स्वामी, वळी मारामां आ सर्व, ज्ञानी समजे एम ने भजे तजीने गर्व. ॥ ॥
मनने प्राणथकी मने भजे कथाय करे, मारी चर्चाथी सदा तृप्ति हर्ष धरे. ॥ ॥
अनन्य प्रेमी भक्तने बुद्धि आपुं छुं, तेथी मुजने मेळवे, बंधन कापुं छुं. ॥ १० ॥
दया करीने ज्ञाननो दीप बनुं छुं हुं, रही हृदयमां तेमनुं अज्ञान हरुं छुं. ॥ ॥
अर्जुन कहे छे :
पवित्र ईश्वर छो तमे, देव जगतना तेम, शश्वत तेमज दिव्य छो, अज अविनाशी तेम. ॥ ॥
नारद तेमज व्यास ने संत कहे छे एम, असित व्यास देवल वळी तमे कहो छो एम. ॥ ॥
साचुं मानुं छुं तमे कहो ते बधुं हुं. देव तेम दानव प्रभो, तमने जाणे शुं! ॥ ॥
तमे ज जाणो छो खरे पूर्ण तमारुं रूप, देवदेव भूतेश हे, जगतनाथ , जगभूप! ॥ १५ ॥
केवी रीते छो तमे व्यापक आअ जगमां विभूतिथी व्यापक थया केम तमे जगमां ॥ ॥
ध्यान तमारुं धारता योगी शे जाणुं, क्या भावथी चिंतवुं, भक्ति हुं माणु. ॥ ॥
योगशक्ति विस्तारथी फरी कहो मुजने, अमृत पीतां थायना तृप्ति खरे मुजने. ॥ ॥
श्री भगवान कहे छे :
ख्याल ज आपुं छुं तने मारा रूप तणो, बराबर कहुं तो तो थाय विस्तार घणो. ॥ ॥
प्राणीश्ओघ्मां हुं रह्यो आत्मरूप थई, आदि मध्य ने अंत हुं सौनो रह्यो बनी. ॥ ॥
विष्णु छुं, ऊगुं वळी जगमां सूर्य बनी, मरिची तेम ज चंद्र छुं हुं नक्षत्र महीं. ॥ ॥
सर्व वेदमां दिव्य ते सामवेद हुं छुं, देवोमां छुं ईद्र ने मन ने चेतन छुं. ॥ ॥
शंकर रूद्रोमां वळी कुबेर पण हुं छुं, अग्नि छुं, मेरु थयो पर्वतमांही हुं. ॥ ॥
देवोना गुरु जे कह्या ते ज बृहस्पति छुं, सेनापतिमां स्कन्द ने सागर जलमां छुं. ॥ ॥
महर्षिमहीं भृगु थयो, हिमालय बन्यो छुं, यज्ञोमां जपयज्ञ ने ॐकार थयो छुं. ॥ २५ ॥
वृक्षोमां छुं पीपळो, नारद तेमज छुं, गंधर्वोमां चित्ररथ, कपिल सिद्धमां छुं. ॥ ॥
अमृतथी प्रगटेल छुं अश्व अलौकिक हुं, ऐरावत हाथीमहीं, मनुष्यमां नृप छुं. ॥ ॥
कामधेनुं छुं गायमां, वज्र शस्त्रमां छुं, धर्मपरायण काम छुं, वासुकि सर्पे हुं. ॥ ॥
अनंत नामे नाग छुं, वरुण तेमज हुं, पितृमां छुं अर्यमा, यमीमहीं यम छुं. ॥ ॥
कालरूप छुं, दैत्यमां प्रह्लाद खरे छुं, पशुमां सिंह थयो वळी, गरुड खगमां छुं. ॥ ३० ॥
पवन तेम पाणीमहीं गंगा पावन छुं, मगरमच्छ छुं, राम छुं शस्त्रवानमां हुं. ॥ ॥
आदि मध्य ने अ/न्त छुं आ सृष्टिनो हुं, विद्यामां अध्यात्म ने वाद विवादे हुं. ॥ ॥
अकार अक्षरमां अने द्वन्द समासे छुं, धाता आश्रय काल छुं अक्षर जगनो हुं. ॥
जन्म तेम मृत्यु वळी थईने रह्यो छुं, स्त्रीनी सुंदरता अने वाणी यश पण हुं. ॥ ॥
धीरज तेम क्षमा थयो, गायत्री पण हुं, मास मागशर ने वळी वसंत ऋतुमां छुं. ॥ ३५ ॥
तेज तेम जय, बल अने बुद्धिरूपे छुं, छळ करनारामां सदा द्युत थयेलो छुं. ॥ ॥
पांडवमां अर्जुन ने वासुदेव छुं हुं, कविमां शुक्राचार्य ने मुनिमां व्यास ज छुं. ॥ ॥
नीति तेम शासकमहीं दंड थयो छुं हुं, गुह्य वातमां मौन ने ज्ञानस्वरूपे छुं. ॥ ॥

जगततणुं छुं बीज हुं, सुणजे अर्जुन, तुं, मारा विण तो आ रहे अस्तित्व खरे शुं ॥ ॥
मारा दैवीरूपनो अंत नाज आवे, आ तो थोडुं छे कह्युं, कोण बधुं गावे ॥ ४०॥
जे जे सुंदर, सत्य ने पवित्र प्रेमल छे, मारा अंश थकी थयुं जाणी लेजे ते. ॥ ॥
बधुं जाणीने तुं वळी करीश अर्जुन शुं मारा एकज अंशमां विश्व बधुंय रह्युं. ॥ ४२॥

अध्याय ११ : विश्वरूपदर्शनयोग
श्री भगवान कहे छे :
कृपा करीने जे कह्या हितना शब्द तमे, तेथी मोह जतो रह्यो मारो, प्रभुजी हे! ॥ ॥
उत्पत्तिलय जगतनां सुण्या प्रेमथी में, महिमा जाण्यो छे वळी तमारा थकी में. ॥ ॥
जगना कारण छो तमे, जगना नाशक छो, रूप तमारुं विश्वमां केवु व्यापक हो! ॥ ॥
जोवाने ते रूपने मुजए ईच्छा थाय, योगेश्वर, ते रूपने बतावो, हृदय च्हाय. ॥ ॥
जोई रूप शकीश हुं एवी खात्री होय, योगेश्वर, तो रूपने बतावो, हृदय च्हाय. ॥ ॥
(जोई रूप शकीश हुं एवी खात्री थाय, योगेश्वर, तो रूपने बतावो, हृदय च्हाय. ॥ ॥)
श्री भगवान कहे छे :
जो तुं मारा रूपने अनेक रूप भर्युं, अनेकरंगी रूप ते, दिव्य विराट धर्युं. ॥ ५॥
रुद्र मरुत आदित्य ने अश्विनीकुमारो, अचरजकारक जो वळी कैं महिमा मारो. ॥ ॥
जो आ मारा अंगमां साराये जगने, जे जे जोवुं होय ते बतावीश तुजने. ॥ ॥
तारी आंखे ना तने देखाशे मुज रूप, दैवी आपुं आंख हुं, जो तुं दिव्य स्वरूप. ॥ ॥
संजय कहे छे :
एम कही योगीतणा योगी श्री प्रभुश्एघ, दिव्य बताव्युं रूप ते प्रेमी अर्जुनने. ॥ ॥
आंख हजारो ने वळी मुख हतां हजार, घरेणां अने वश्त्रो हता त्यां खूब अपार. ॥ १०॥
(आंख हजारो ने वळी मुख हतां हजार, घरेणां अने वश्त्रो हता त्यां नहीं पार. ॥ १०॥)
माळा तेमज गंधथी शोहित हतुं शरीर, विराट दिव्य अनंत ने अचरजपूर्ण शरीर.॥ ॥
हजार सूर्य ऊगे कदी ने प्रकाश पथराय, तेमज प्रभुना रूपनुं तेज बधे पथराय. ॥ ॥
प्रभुशरीरमां अर्जुने जग आखुं जोयुं, अनेक रूपोमां रह्युं जग आखुं जोयुं. ॥ ॥
अचरज पामेलो वळी रोमांचित अर्जुन, शीश नमावीने वद्यो रोमंचित अर्जुन. ॥ ॥
अर्जुन कहे छे :
देव, तमारा देहमां समाया बधा लोक, कमळपरे ब्रह्मा अने ऋषि पण त्यां छे कोक. ॥ १५॥
हाथ तेम आंखो वळी पेट गणी न शकाय, आदि मध्य के अंत आ रूपतणो न जणाय. ॥॥
मुकुट गदा ने चक्रथी शोभे दिव्य स्वरूप, तेजतणो अंबार आ जोश्ईघ न शकुं रूप. ॥॥
विराट तेम प्रदीप्त छे दिव्य तमारुं रूप, चारे बाजु देखतो दिव्य तमारुं रूप. ॥ ॥
अमर तमे, उत्तम तमे, फक्त जाणवाजोग, धर्मतणा रक्षक तमे, एक अनन्य अमोघ. ॥ ॥
जगना आश्रय, आदि ने अंत विनाना छो, सनातन, बली, विश्वने तपावी रह्या छो. ॥ ॥
सूर्यचंद्रनी आंख छे, हाथ हजार वळी, अग्नि जेवा वदनना, रह्या प्रकाश करी. ॥ ॥
पृथ्वी ने आकाशमां व्यापक एक तमे, सर्व दिशामां छो रह्या दिव्य स्वरूप तमे. ॥ ॥
उग्र रूप जोई थया भयभीत बधा लोक, प्रवेशी रह्या रूपमां देवजनो पण कोक. ॥ २०॥
देव तमोने वंदता वंदे ऋषि पण तेम, स्तवन करे छे सिद्ध सौ, गान गाय ना केम ॥ ॥

रुद्र तेम वसु, साध्य ने विश्वदेव गंधर्व, पितृ यक्षो सिद्ध सौ जुए तजीने गर्व. ॥ ॥
कुमार मरुतगणो वळी अचरजथी जोता, महान जोई रूपने भान बधुं खोता. ॥ ॥
अनेक मुख नेत्र ने बाहु तेम पग छे, दाढ भयंकर देखतां भीत थयुं जग छे. ॥ ॥
नभने अडनारुं वळी रंगतेजमय रूप, विशाळ नयने ओपतुं दिव्य विराट स्वरूप. ॥॥
व्यथा थाय छे देखतां, प्राण खरे गभराय, धीरज खूटी जाय ने मननी शांति हराय. ॥॥
प्रलयकार अंगारशुं जोई उग्र स्वरूप, ज्ञाअव्यवस्था ना रहे, प्रसन्न हो जगभूप. ॥ ॥
धृतराष्ट्रतणा पुत्र सौ कैं राजानी साथ, भीष्म द्रोण के कर्ण आ, वीर अमारा लाख. ॥॥
घोर तमारा वदनमां सर्वे प्रवेशे छे, चोंटे दांते, कैंकना मस्तक तूटे छे. ॥ ॥
नदी हजारो जाय छे सागरमाहीं जेम; लाखो लोको पेसता वदन तमारे तेम. ॥ ॥
पतंगियुं दीवे पडे मरवा माटे जेम, लाखो लोको पेसता वदन तमारे तेम. ॥ ॥
जीभ तमे चाटो गळी जलदमुखे सौ लोक, उग्र प्रभाथी तेजथी भरी रह्या छे लोक. ॥ ३० ॥
उग्र रूपना कोण छो देव, कहो मुजने, मूळ रूप धारो, पडे समज कैं न मुजने. ॥ ॥
श्री भगवान कहे छे :
काळ लोकनो हुं थयो नाशकाज तैयार, नहीं होय तुं तोय आ वीर बधा मरनार. ॥ ॥
तेथी ऊभो था, लडी, राज्य करी, यश ले, निमित्त था तुं तो हवे, वीर हण्या छे में. ॥ ॥
(तेथी ऊभो था, लडी, राज्य करी, यश ले, निमित्त था तुं तो हवे, वीर हण्या में. ॥ ॥)
द्रोण भीष्म ने कर्ण ने जयद्रथ वीर हजार, हणेल में तुं हण हवे, चिंता कर न लगार. ॥ ॥
युद्ध करी ले भय तजी, विजय थशे तारो, शत्रुने तुं मारशे, विजय थशे तारो. ॥ ॥
वचनो आवा सांभळी, वंदन खूब करी, गद् गद् स्वरथी बोलियो अर्जुन प्रेम धरी. ॥ ३५ ॥
अर्जुन कहे छे :
हरखाये सौ लोक ने कीर्ति तमारी गाय, राक्षस नासे भयथकी, सिद्ध नमे ने गाय. ॥ ॥
केम नए ना ते बधा, सौना आदि तमे, अनंत विश्वाधार छो, अक्षर परम तमे. ॥ ॥
मूळ सर्वना छो तमे, छो जगत आधार, परमधाम सर्वज्ञ छो सौना सर्जनहार. ॥ ॥
(मूळ सर्वना छो तमे, छो जगतना आधार, परमधाम सर्वज्ञ छो सौना सर्जनहार. ॥ ॥)
पुराण पुरुष छो तमे, वळी सौना ज्ञाता छो, ज्ञेयरूप छो, सर्व ने सर्वथकी पर छो. ॥ ॥
(पुराण पुरुष तमे, वळी सौना ज्ञाता छो, ज्ञेयरूप छो, सर्व ने सर्वथकी पर छो. ॥ ॥)
यम, अग्नि ने वायु ने वरुण चंद्र तमे, ब्रह्मा, ब्रह्माना पिता, अनंत रूप तमे. ॥ ॥
व्यापक विश्वमहीं वळी विश्वथकी पर छो, नमुं हजारोवार ने नमन फरी पण हो. ॥ ॥
आगळ पाछळथी नमुं, चारे तरफ नमुं, अखूट बलभंडार हे, वारंवार नमुं. ॥ ॥
अनंतवीर्य, तमे सदा सौमां व्यापक छो, सर्वरूप छो हे प्रभो, जीवनदायक छो. ॥ ४० ॥
मित्र मानतां में कह्यां हशे वचन कपरां, प्रेम तेम अज्ञानथी वचन कह्यां कपरां. ॥ ॥
कृष्ण, सखा, यादव हशे एम कहेलुं में, महिमाने जण्याविना कह्युं भूलथी के; ॥ ॥
बीजानी सामे वळी एक हशो त्यारे, रमतां, सूतां, बेसतां, के भोजनकाळे; ॥ ॥
वारंवार कह्युं हशे तेम वळी अपमान, ते सौ माफ करो मने, मागुं छुं वरदान. ॥ ॥
जडचेतनना छो पिता, पूज्य वळी गुरु छो, तमारा समो अन्य ना श्रेष्ठ कोण छे तो ॥ ॥
पूज्य देव तेथी नमुं काय नमावी हुं, प्रार्थु वारंवार आ शीश नमावी हुं. ॥ ॥

क्षमा करे सुतने पिता, मित्र मित्रने जेम, माफ करे प्रियने प्रिय, माफ करी दो तेम. ॥ ॥
अपूर्व जोई रूप आ व्यथा तेम भय थाय, देवरूपने तो धरो, भय आ मारो जाय. ॥ ॥
दैवी रूप धरो हवे, हे देवेश, तमे, प्रसन्न थाओ विश्वना हे आधार तमे. ॥ ॥
गदा मुकुट ने चक्रने धारी प्रभु, प्रकटो, विराट रूप त्यजी दई चतुर्भुज प्रकटो. ॥ ॥
श्री भगवान कहे छे :
प्रसन्न बनतां रूप आ तने बताव्युं में, कोईये तारा विना जोयुं नथी ज ते. ॥ ॥
श्रेष्ठ तेजमय आद्य ने अनंत मारुं रूप, आत्मयोगना बल थकी दिव्य बताव्युं रूप. ॥ ॥
वेद, दान ने यज्ञथी, तीरथ के तपथी, जोवाये ना रूप आ, ज्ञान अने जपथी. ॥ ॥
मूढभाव भय छोड तुं, निर्भयताने धार, दिव्य रूपने जो हवे, व्यथा हृदयनी टाळ. ॥ ॥
संजय कहे छे :
एम कही प्रभुश्एघ धर्युं फरी दिव्य निजरूप, आश्वासन आप्युं वळी धरतां शांत स्वरूप. ॥ ५०॥
अर्जुन कहे छे :
जोश्ईघ मानव रूप आ हवे तमारुं शांत, स्वस्थ थयो छुं ने वळी मुजने थश्ईघ निरांत. ॥ ॥
(जोश्ईघ मानव रूप आ हवे तमारुं शांत, स्वस्थ थयो छुं ने वळी मुजने छेक निरांत. ॥ ॥)
श्री भगवान कहे छे :
जोवुं जे मुश्केल ते जोयुं तें मुज रूप, देवो पण झंखी रह्या जोवा मारुं रूप. ॥ ॥
जे रूपे जोयो मने तेम जुश्एघ को ना, वेद यज्ञ तप दानथी श्के निहाळी ना. ॥ ॥
भक्ति खूब ज होय तो आवुं दर्शन थाय, ज्ञान थाय मारुं अने भेद बधाये जाय. ॥ ॥
भक्त बने मारो ज जे, संगदोष छोडे, मुजने झंखे ते जगे तरे अने तारे. ॥ ॥
कर्म करे मुज काज जे, संगदोष छोडे, प्राप्त करे मुजने ज ते, बंधन सौ तोडे. ॥ ५५ ॥

अध्याय १२ : भक्तियोग
अर्जुन कहे छे :
तम साकार प्रभुनी भक्ति कोश्ईघ करे, ने कोश्ईघ निराकार ब्रह्मने पूजे. ॥ ॥
(जोडाई तम साथ जे भक्ति भक्त करे, अविनाशी अव्यक्तनी भक्ति तेम करे. ॥ ॥)
ते बन्नेमां मानवो उत्तम योगी कोण प्रश्न थाय मुजने, कहो उत्तम योगी कोण ॥ १॥
(ते बन्नेमां मानवो उत्तम योगी कोण प्रश्न थाय मुजने, हशे उत्तम योगी कोण ॥ १॥)
श्री भगवान कहे छे :
मारामां मन जोडतां, श्रद्धा खूब करी, संधाश्ईघ मुज साथ जे मुजने सर्व धरी, ॥ ॥
करतां भक्ति मानजे उत्तम तुं तेने, उत्तम योगी मुजमहीं आसक्ति जेने. ॥ २॥
अविनाअशी अव्यक्त ने अचिंत्य ब्रह्म स्वरूप, सर्वव्यापक जे भजे स्थिर कुटस्थ स्वरूप, ॥ ॥
(अविनाअशी अव्यक्त ने अचिंत्य मारूं रूप, सर्वव्यापक जे भजे स्थिर कुटस्थ स्वरूप, ॥ ॥)
ने समबुद्धि धारी बने जे ईन्द्रियस्वामी, सौनुं हित करनार ते पण अंते जाय मने पामी. ॥ ॥
(समबुद्धि धारी बने जे ईन्द्रियस्वामी, सौनुं हित करनार ते जाय मने पामी. ॥ ॥)
निराकार ब्रह्म भज्ये क्लेश घणो थाये, देहवान अव्यक्तमां दुःख थकी जाये. ॥ ५॥
बधां कर्म अर्पी मने मत्पर जे जन थाय, अनन्य भावे जे भजे धरतां ध्यान सदाय; ॥ ॥
मृत्युलोकथी तेमनो करवामां उद्धार, विलंब ना हुं कदी करुं जेने मन हुं सार. ॥ ॥

मारामां मन राख ने बुद्धि मुजमां धार, प्राप्त करीश मने पछी, शंका कर न लगार. ॥ ॥
मारामां जो चित्तने स्थिर करी न शकाय, अभ्यासतणा योगथी कर तो यत्न सदाय. ॥ ॥
अभ्यास थकी जो मने प्राप्त करी न शके, मारे माटे कर्म तो कर ते योग्य थशे. ॥ ॥
(अभ्यास थकी जो मने प्राप्त करी न शके, मारे माटे कर्म तो कर ते योग्य हशे. ॥ ॥)
मुज माटे कर्मो करी सिद्धि मेळवशे, मारे माटे कर्म कर तो ते योग्य थशे. ॥ १० ॥
जो ते ना ज करी शके, शरण लश्ईघ मारुं, सर्व कर्मफळ त्याग तुं, तो य थशे सारुं. ॥ ॥
ज्ञान श्रेष्ठ अभ्यासथी मंगलकारक छे, ध्यान वधे छे ज्ञानथी एम कहेलुं छे. ॥ ॥
ध्यान थकी छे कर्मना फलनो त्याग महान, शांति मळे छे त्यागथी एम सदाये जाण. ॥ ॥
सर्व जीव पर मित्रता, दया प्रेम जेने, ममता मद ने वेरने दूर कर्या जेणे. ॥ ॥
समान सुख ने दुःखमां, क्षमाशील छे जे, संतोषी ने संयमी योगी तेम ज जे. ॥ ॥
मन बुद्धि अर्पण करी मने भजे छे जे, दृढ निश्चयथी, ते मने भक्त खरे प्रिय छे. ॥ ॥
(मन बुद्धि अर्पण करी मने भजे छे जे, दृढ निश्चयथी, छे मने भक्त खरे प्रिय ते. ॥ ॥)
दुभवे कोश्ईघ्ने नहीं, कोश्ईघ्थी न दुभाय, हर्ष शोक भयने तज्यां; प्रिय ते भक्त गणाय. ॥ १५ ॥
व्यथा तेम तृष्णा नथी, दक्ष शुद्ध छे जे, उदासीन संसारथी, प्रिय छे मुजने ते. ॥ ॥
हर्ष शोक आशा अने वेर करे ना जे, मोहे ना शुभ अशुभथी, प्रिय छे मुजने ते. ॥ ॥
मान वळी अपमान हो, शत्रु मित्र के होय, करे खूब गुणगान के निंदा छोने कोय. ॥ ॥
तुष्ट रहे प्रारब्धथी, सुखदुःखे न डगे, संग तजे, समता धरे, ना बंधाय जगे. ॥ ॥
उपाधि ना जेने वळी घरमां ना ममता, स्थिरबुद्धि जे भक्त ते खूब मने गमता. ॥ ॥
धर्मतणुं अमृत आ श्रद्धापूर्वक जे, पीश्एघ भक्तजनो मने खूब गमे छे ते. ॥ ॥
मारुं शरण लश्ईघ सदा भक्त भजे छे जे, धर्मसारने समजतां, प्रिय चे मुजने ते. ॥ २० ॥

अध्याय १३ : क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग

श्री भगवान कहे छे :

आ शरीर अर्जुन हे, क्षेत्र एम कहेवाय, जे जाणी ले तेहने ते क्षेत्रज्ञ गणाय. ॥ ॥
सर्व सरीरोमां मने क्षेत्रज्ञ खरे जाण, ज्ञान क्षेत्रक्षेत्रज्ञनुं ज्ञान सत्य ते मान. ॥ ॥
क्षेत्र तेम क्षेत्रज्ञ शुं, प्रभाव तेनो शुं, विकार तेना, ते बधुं कहुं टूंकमां हुं. ॥ ॥
विविध छंदमां आ कह्युं ज्ञान कैंक ऋषिश्एघ, ब्रह्मसूत्रनां पदमहीं तेने गायुं छे. ॥ ॥
महाभूत बुद्धि वळी अव्यक्त अहंकार, दश ईन्द्रियो मन अने पांच विषय विस्तार. ॥ ॥
ईच्छा सुख ने दुःख ने द्वेष चेतना तेम, द्युति संघात कहेल छे क्षेत्र विकारी एम. ॥ ५स्६ ॥
मानी ना बनवुं वळी दंभ दर्प तजवां, दया राखवी, जीवने कोदी ना हणवां. ॥ ॥
बुरुं करे कोश्ईघ कदी तोय क्षमा करवी, सरल हृदय ने प्रेमथी वात सदा करवी. ॥ ॥
पूज्य गुरुने मानवा, स्वच्छ सदा रेवुं, चंचळताने छोडवी, मन जीती लेवुं. ॥ ॥
ईन्द्रियोना स्वादमां सुख ना कदी जोवुं, काम क्रोध अभिमानने मूकी मन धोवुं. ॥ ॥
जन्म थाय ने मरण ने रोग वळी थाये, घडपण आवे एम आ जीवन तो जाये. ॥ ॥
(जन्म थाय छे मरण ने रोग वळी थाये, घडपण आवे एम आ जीवन तो जाये. ॥ ॥)

एम दुःख दोषो बधा जीवनना जोवा, वैराग्य तणा लेपथी विकार सौ धोवा. ॥ ॥

स्त्री घर संताने नहीं ममता रति करवी, सरा नरसा समयमां धीरजने धरवी. ॥ ॥
अनन्य भाव करी सदा मुज भक्ति करवी, जनसमूहनी प्रीत ना स्वप्ने पण करवी. ॥ १० ॥
शांत स्थळे रेवुं, वळी करवो त्यां अभ्यास, ज्ञान मेळवी पामवा ईश्वरने तो खास. ॥ ॥
(शांत स्थळे रेवुं, वळी करवो त्यां अभ्यास, ज्ञान मेळवी पामवा ईश्वरने अभ्यास. ॥ ॥)
जीवननुं धन मानतां मेळववो मुजने, आ सौ ज्ञान-तणां कह्यां लक्षण में तुजने. ॥ ॥
ते ज जाणवा जोग छे जेथी अमर थवाय, अनादी ते परब्रह्मने सत्यासत्य गणाय. ॥ ॥
(ते ज जाणवा जोग छे जेथी अमर थवाय, अनादी ते परब्रह्मना सत्यासत्य गणाय. ॥ ॥)
ते ईश्वरने जाणजे, जे व्यापक सघळे, बधे हाथ पग आंख छे, शिर जेनां सघळे. ॥ ॥
गुणप्रकाशक तेम छे ईन्द्रियथी पर ते, धारणकर्ता सर्वना अनासक्त पण छे. ॥ ॥
(गुणप्रकाशक तेम छे ईन्द्रियथी पर ते, धारण करता सर्वना अनासक्त पण छे. ॥ ॥)
चराचर बधा जीवनी बहार अंदर छे, सुक्ष्म खूब छे, एटले अगम्य ते प्रभु छे. ॥ ॥
दूर रह्या ते तोय छे हृदये खूब ज पास, सौने सरजी पाळता, करता सौनो नाश. ॥ १५ ॥
समग्र जीवोमां रह्या विभक्त जेवा ते, पोषक सौना ज्ञेय ने नाशक सर्जक छे. ॥ ॥
प्रकाशनाय प्रकाश ते, अंधकारथी दूर, हृदयमां रह्या सर्वना, ज्ञान प्रेमना पूर. ॥ ॥
ज्ञान, ज्ञेय ने क्षेत्रने कह्युं टुंकमां में, भक्त भाव मुज मेळवे ज्ञान मेळवी ते. ॥ ॥
प्रकृति पुरुष अनादि छे एम खरे तुं जाण, विकार ने गुण उपज्या प्रकृतिमांथी मान. ॥ ॥
कारण तेम ज कार्यने छे प्रकृति करनार, पुरुष सुख दुःखना भोगो भोगवनार. ॥ २० ॥
प्रकृतिना गुणनो पुरुष जो थाये भोग, तेथी तेने थाय छे जन्ममरणनो रोग. ॥ ॥
(प्रकृतिना गुणनो करे पुरुष सदाये भोग, तेथी तेने थाय छे जन्ममरणनो रोग. ॥ ॥)
साक्षी पालक सर्वना महेश्वर कह्या ते, परमात्मा उत्तम वळी आ शरीरमां छे. ॥ ॥
परम पुरुष ते तो सदा देहे वास करे, दृष्टा मंतारूप ते सौमां वास करे. ॥ ॥
पुरुष तेम गुण साथ जे प्रकृतिने जाणे, कोश्ईघ स्थितिमां ते नहीं फरी जन्म पामे. ॥ ॥
कोश्ईघ प्रभुने ध्यानमां हृदये देखे छे, कोश्ईघ ज्ञानथकी करी कर्मे पेखे छे. ॥ ॥
बीजा पासे सांभळी प्रभुने भजता जे, तरी जाय छे मोतने सुणनाराये ते. ॥ २५ ॥
जड ने चेतन जन्मतुं जे कैं पण देखाय, ते प्रकृति ने पुरुषना समागम थकी थाय. ॥ ॥
समानरूपे सर्वमां वसी रह्या प्रभु ते, तेने जे जोता सदा जोता साचुं ते. ॥ ॥
विनाशी बधी वस्तुमां अविनाशी प्रभु ते, तेने जे जोता सदा जोता साचुं ते. ॥ २७ ॥
आत्मा जेवा अन्यने ते न कदी मारे, विनाशी जगे जे सदा प्रभुने भाळे. ॥ ॥
प्रकृति कर्म करे बधां, आत्मा कैं न करे, एम जाणता जाणता साचुं, ते ज तरे. ॥ ॥
भिन्न जीव प्रभुमां रह्या ते प्रभुथी थाये, समजे एवुं तेमने प्रभु प्राप्ति थाये. ॥ ३० ॥
परमात्मा अविनाशी ने अनादि निर्गुण आ, कैं न करे देहे रही के लेपाये ना. ॥ ॥
व्यापक तोये सूक्ष्म, ना लिप्त थाय आकाश, आत्मा तेम ज अंगमां ना लेपाये खास. ॥ ॥
सूर्य जेम एक ज छतां बधे प्रकाश करे, आत्मा तेम ज देहमां बधे प्रकाश धरे. ॥ ॥
क्षेत्र तेम क्षेत्रज्ञ ने जीव प्रकृति ज्ञान, मोक्ष वळी जे जाणता, ते थता कल्याण. ॥ ३४ ॥
(क्षेत्र तेम क्षेत्रज्ञ ने जीव प्रकृति ज्ञान, मोक्ष वळी जे जाणता, ते करता कल्याण. ॥ ३४ ॥)

श्री भगवान कहे छे :
फरीथी कहुं छुं तने ज्ञान तणुं ये ज्ञान, जेने जाणी मुनिवरो पाम्या छे कल्याण. ॥ ॥
पामीने आ ज्ञानने जे मुजने मळतां, ते कल्पे ना जन्मता, प्रलये ना मरता. ॥ ॥
प्रकृति मारी योनि छे, तेमां प्राण धरुं, तेथी विश्व विराट आ जन्मे छे सघळुं. ॥ ॥
भिन्न योनिमां जीव जे जगमां जन्म धरे, पिता तेमनो गण मने, प्रकृति मात खरे. ॥ ॥
सत्व रज अने तम त्रणे प्रकृतिना गुण छे, शरीरमां लपटावता माणसने गुण ते. ॥ ५ ॥
सत्वगुण खरे शुद्ध छे, रूप तेजनुं छे, सुखनी तेमज ज्ञाननी साथे बांधे छे. ॥ ॥
रजोगुण उठे रागथी, तृष्णाथी ते थाय, कर्ममहीं मानव सदा तेनाथी बंधाय. ॥ ॥
अज्ञान थकी ऊपजे वळी तमो-गुण तो, प्रमाद आळस ऊंघथी बांधे छे ते तो. ॥ ॥
सुख आपे छे सत्व गुण, रज कर्मे दोरे, तम तो ज्ञान हरे, भरे आळसने जोरे. ॥ ॥
रज ने तम ने ढांकता वधे सत्वगुण आ, रजोगुण वधे ने कदी वधे तमोगुण आ. ॥ १० ॥
रोमरोममां अंगमां प्रकाशज्ञान छवाय, सत्वगुण वध्यो तो खरे, जोतां एम गणाय. ॥ ॥
लोभ प्रवृत्ति थाय ने तृष्णा वधती जाय, रजोगुण वध्ये काबु ना ईन्द्रियोनो थाय. ॥ ॥
विवेक तुटे, मोह ने प्रमाद आळस थाय, तमोगुण वधे ते समे लक्षण आम जणाय. ॥ ॥
सत्वगुण महीं मोत जो कोश्ईघ जनजुं थाय, तो ते उत्तम लोकमां शुद्ध लोकमां जाय. ॥ ॥
रजोगुण महीं जो मरे, कर्मीजनमां जाय, मूढयोनिमां जाय जो मोत तम महीं थाय. ॥ १५ ॥
सत्कर्म तणुं सात्विक तेमज निर्मल फल साचे ज मळे;
रजनुं फल छे दुःख, तेम तमनुं फल छे अज्ञान खरे. ॥ ॥
सत्वगुण थकी ज्ञान ने लोभ रज थकी थाय, मोह तेम अज्ञान ने प्रमाद तमथी थाय. ॥ ॥
सत्विक गति उत्तम लभे, राजस मध्यमने, तमोगुणी लोको लभे सदा अधम गतीने. ॥ ॥
कर्मतणो कर्ता नथी गुणो विना कोश्ईघ, आत्मा गुणथी पर सदा, समजे ए कोश्ईघ, ॥ ॥
त्यारे ते मुज भावने प्राप्त थश्ईघ जाये, निर्विकार बनतां मने प्राप्त थश्ईघ जाये. ॥ ॥
आ त्रण गुणने जीतीने जे तेथी पर थाय, जन्मजराथी ते छूटी अमृतरसमां न्हाय. ॥ २० ॥
(आ त्रण गुणने जीततां जे तेथी पर थाय, जन्मजराथी ते छूटी अमृतरसमां न्हाय. ॥ २० ॥)
अर्जुन कहे छे :
आ त्रण गुणने जीततां जे तेथी पर थाय, केवा लक्षणथी कहो तेनी ओळख थाय. ॥ ॥
(आ त्रण गुणने जीततां जे तेथी पर थाय, केवा लक्षणथी कहो तेनी ओळख थाय. ॥ ॥)
श्री भगवान कहे छे :
मोहथी चळे ते नहीं, कर्मे ना लेपाय, द्वेष करे ना कर्म के शांतिने ना च्श्हाघ्य. ॥ ॥
उदासीन जेवो रहे, गुणथी चलित न थाय, गुणो वर्तता गुणमहीं समजी चलित न थाय. ॥ ॥
सुख ने दुःखमहीं रहे शांत चित्त जेनुं, माटी सोनुं पत्थरे सरखुं मन तेनुं. ॥ ॥
कोश्ईघ नींदे के करे कोई भले वखाण, मान करे, कोई करे छो ने के अपमान. ॥ ॥
बधी दशामां ते रहे शांत प्रसन्न समान, सरखा शत्रु मित्र छे, गुणातीत ते जाण. ॥ २५ ॥
खूब प्रेमभक्ति करे मारे माटे जे, गुणने जीती प्रभुसमो बनी जाय छे ते. ॥ ॥
अमर विनश्वर ब्रह्मनी प्रतिष्ठा मने जाण, सुख ने शाश्वत धर्मनो आधार मने मान. ॥ २३ ॥

श्री भगवान कहे छे :
अविनाशी आ जगतने कह्यो पीपळो छे, तेनो जाणे सार जे ज्ञानी साचो ते. ॥ ॥
गुणोथी वधी, विषयना मृदु पत्रोवाळी, शाखा तेनी उपर ने नीचे छे सारी.॥ ॥
मनुष्यलोकमां कर्मथी बांधनार छे ते, नीचे शाखा, उपर छे मूळ वृक्षनुं ए. ॥ ॥
स्वरूप तेनुं स्श्हेघ्जमां समजी ना ज शकाय, आदि अंत संसारनां समजी ना ज शकाय. ॥ ॥
लोको पाछा आवता कदी ज्यांथी ना, ते उत्तमपद पामवुं जन्म धरीने आअ. ॥ ॥
(ज्यांथी पाछा आवता ज्ञानी लोको ना, ते उत्तमपद पामवुं जन्म धरीने आअ. ॥ ॥)
जेनाथी आ जगतनी प्रवृत्ति चाले, ते परमात्मा पामवा जगने जे पाळे; ॥ ॥
दृढ आ द्रुम संसारनुं एम विचारी जे, अनासक्तिना शस्त्रथी छेदे बुधजन ते. ॥ ॥
मान मोह आसक्तिना दोष नथी जेने, आत्माग़्यानमां मग्न छे, काम नथी जेने;
सुख ने दुःख छे सम बधां द्वंदथकी पर छे, तेवा ज्ञानी पामता अविनशी पदने. ॥ ५ ॥
(सुख ने दुःखसमां बधां द्वंदथकी पर छे, तेवा ज्ञानी पामता अविनशी पदने. ॥ ५ ॥)
अग्नि सूरज चंद्र ना जेने तेज करे, जन्ममरणथी मुक्त ते मारुं धाम खरे. ॥ ॥
(अग्नि सूरज चंद्र ना जेने तेज धरे, जन्ममरणथी मुक्त ते मारुं धाम खरे. ॥ ॥)
जीव अंश मारो थई शरीरमां वसतो, ईन्द्रियो ने मनतणुं आकर्षण करतो. ॥ ॥
सुवास कोई फूलनी पवन लईने जाय, तेम जीव आ अंगथी मृत्यु समये जाय. ॥ ॥

आंख कान ने नाक ने जीभ त्वचा मनने, साधन करतां भोगवे जीव विषय रसने. ॥ ॥
जीव देहथी जाय छे, देहे भोग करे, मूढ जुश्एघ एन नहीं, दर्शन संत करे. ॥ १० ॥
योगी यत्न करी जुए अंतरमां तेने, यत्न कर्ये पण ना जुए चंचळजन एने. ॥ ॥
अग्नि सूरज चंद्रमां जे कैं तेज जणाय, तेज ते बधुं में धर्युं, मारुं एम गणाय. ॥ ॥
धारुं छुं हुं जगतने पृथ्वी ना रूपमां, पोषुं छुं ने औषधि ढळी चंद्ररसमां. ॥ ॥
जठराग्नि बनतां रह्यो शरीरमांये हुं, चार जातना अन्नने हुं ज पचावुं छुं. ॥ ॥
सौना हैये छुं रह्यो जीवनप्राण थई, ज्ञान, ज्ञाननुं मूळ छुं, साची वात कही. ॥ ॥
संशयनाशक ज्ञान ने स्मृतिनो दाता हुं, वेदांत ने वेदनो जाणनार पण छुं. ॥ १५ ॥
आत्मा तो अविनाश छे, छे शरीरनो नाश, क्षर ने अक्षर वस्तुनो एम विश्वमां वास. ॥ ॥
परमात्मा बीजा वळी एथी उत्तम छे, जे व्यापक जगमां थया, ईश्वर साचे ते. ॥ ॥
क्षर अक्षरथी श्रेष्ठ हुं, एथी अर्जुन हे, कहे वेद ने जगतमां पुरुशोत्तम मुजए. ॥ ॥
मए ज पुरुषोत्तमरूपे जाणे ज्ञानी जे, भजे सर्वभावेए मने सर्वज्ञ खरे ते. ॥ ॥
खूब गूढमां गूढ आ शास्त्र कह्युं छे में, धन्य तेम ज्ञानी बने आने जणे ते.॥ २० ॥

अध्याय १६ : दैवासुरसंपदविभागयोग
दरवुं कोईथी नहीं, थवुं सदा शुरवीर, खेल करी, कसरत करी, करवुं सरस शरीर. ॥ ॥
प्रभुना बाळक छे बधा एम सदा समजी, प्रभुने जोवा सर्वमां, भेद बधाय तजी. ॥ ॥
साप, सिंह ने डाकुथी डरवुं ना कदिकाळ, रक्षक छे प्रभु सर्वना, डरवुं ना कदिकाळ. ॥ ॥
चोरी तेमज जूठ ने निंदाथी डरवुं, बाकी कायरता तजी संसारे फरवुं. ॥ ॥
धर्मनीतिथी चालवुं प्रभुथी करवी प्रीत, डरवुं ईश्वर एकथी, थई जाय तो जीत. ॥ ॥

वस्त्र जेम धोवाय छे धोवुं मन तेवुं, दुर्गुण तेमज द्वेषने स्थान ज ना देवुं. ॥ ॥
ज्ञान पामवुं ते बधुं, धरवुं खूबज ध्यान, उतारवुं जीवनमहीं उत्तम एवुं ज्ञान. ॥ ॥
मन हंमेशां मारवुं, बनतुं करवुं दान, अनाथ दुःखी दीनने अन्नवस्त्रनुं दान. ॥ ॥
धनथी बीजी शक्तिथी करवां सौना काम, थवुं कदी स्वार्थी नहीं भजवा आतमराम. ॥ ॥
मन वाणी ने देहनो संयम पण करवो, पण अभिमान न राखवुं, नम्र भाव धरवो. ॥ ॥
हिंसा करवी ना कदी, सत्य वळी वदवुं, झेर क्रोधने जाणवुं, वेर वळी तजवुं. ॥ ॥
शांत चित्तथी बोलवुं, वसवुं आ जगमां, दया दीन पर लाववी, ज्ञमधुर थवुं दृगमां. ॥ ॥
खोटां कामोमां सदा लज्जाने धरवी, लोलुपता ना राखवी, चंचळता हरवी. ॥ ॥
तेजस्वी बनवुं, वळी क्षमा सदा करवी, द्रोह न करवो ने सदा धीरजनेए धरवी. ॥ ॥
अहंकार ना राखवो, करवुं शुद्ध शरीर, दैवी गुणवाळा तणा गुण आ, अर्जुन वीर! ॥ ॥
दंभ दर्प अभिमान ने जेओ करता क्रोध, कठोर ने जे अज्ञ छे, न करे प्रभुनी शोध. ॥ ॥
दुर्गुणवाळा ते कह्या राक्षस जेवा लोक, सुख ना पमे ते कदी करे सदाये शोक. ॥ ॥
तेथी दुर्गुण छोडवा ने गुणियल बनवुं, दैवी गुणवाळाअ बनी जीवनने तरवुं. ॥ ॥
सद् गुणथी शांति मळे, टळी जायछे दुःख, दुर्गुणथी तो ना कदी शमे शांतिनी भूख. ॥ ॥
सद् गुणथी तुं छे भर्यो, अर्जुन, ना कर शोक, सुखी थशे साचे हवे, क्लेश करीश न फोक. ॥ ५ ॥
दैवी तेमज आसुरी वृत्ति तो बे छे, दैवी विस्तारे कही आसुरी सुण हवे. ॥ ॥
शुं करवुं, शुं छोडवुं, तेने ना जाणे, सत्य शौच आचार ना पाळे कदी काळे. ॥ ॥
असत्य ने आधारथी रहित जगत छे आ, परस्पर थयुं भोगमय, प्रभु तेमां छे ना. ॥ ॥
आवा क्षुद्र विचारथी खोटां कर्म करे, मंदबुद्धिना लोक आ जगनोओ नाश करे. ॥ ॥
तृष्णा तेमज दंभ ने मानमदे भरिया, मोह थकी घेरायेला मानव ते मरिया. ॥ ॥
खोटी वातोने सदा पकडी ते राखे, अशुद्ध व्रतने आचरे, असत्यने भाखे. ॥ १० ॥
अपार चिंता प्रयलना काळ लगी करता, भोग भोगवो जगतमां ए शिक्षा धरता. ॥ ॥
अधर्मथी धन मेळवे करे भोग ने शोक, आशा तृष्णाथी भर्या, कामी क्रोधी लोक. ॥ ॥
द्रव्य आटलुं मेळव्युं, हजीय मेळववुं, आ ईच्छा पूरी थई, हजी काम करवुं. ॥ ॥
(द्रव्य आटलुं मेळव्युं, हजीय मेळवुं, आ ईच्छा पूरी थई, हजी काम करवुं. ॥ ॥)
आ शत्रुने में हण्यो, बीजाने हणवो, ईश्वर, भोगी, सिद्ध हुं, बली, सुखी वरवो. ॥ ॥
मारा जेवो कोण छे, धनी मान्य छुं हुं, करुं यज्ञ ने दान ने भोग भोगवुं हुं. ॥ ॥
एवा दुष्ट विचारथी मोहे डूब्या जे, भ्रमित चित्तना मानवी पडे नरकमां ते. ॥ ॥
भोगविलासे रत वळी मानमदे भरिया, ममता, मोटाई अने मोहमहीं मरिया. ॥ ॥
विविध जातना यज्ञ ने अनुष्ठान कर्ता, दंभ तेम पाखंडथी विधिने ना करता. ॥ ॥
अहंकार, बळ, दर्प ने कामक्रोधवाळा, द्वेष करे मारो सदा निंदक ते मारा. ॥ ॥
अधम क्रूर ते दुष्टने दुःखी सदा राखुं, घोर आसुरी योनिमां ते सौने नाखुं. ॥ ॥
लभी आसुरी योनिने अनेक जन्मे ते, मए मेळवेन कदी, लभे अधम गतिने. ॥ २० ॥
काम, क्रोध, ने लोभ छे द्वार नरकनां त्रण, नाश करी दे आत्मनो, तजी दे लई पण. ॥ ॥
अंधारा ए द्वारथी मुक्त थाय जे जन, ते ज करे कल्याण ने पामे छे गति धन्य. ॥ ॥
शास्त्रविधिने छोडीने मनस्वीपणे जे, कर्म करे, ते ना लभे सिद्धि मुक्ति सुख के. ॥ ॥

(शास्त्रोनी विधि छोडतां मनस्वीपणे जे, कर्म करे, ते ना लभे सिद्धि मुक्ति सुख के. ॥ ॥)
कर्ममहीं तो शास्त्रने प्रमाण तुं गणजे, शास्त्राज्ञा मानी सदा कर्म बधां करजे. ॥ २४ ॥

अध्याय १७ : श्रद्धात्रयविभागयोग

अर्जुन कहे छे :

शास्त्रोनी विधिने मुकी श्रद्धाथी ज भजे, सात्विक, वृत्ति तेमनी, राजस तामस के ॥ ॥

श्री भगवान कहे छे :

सौनी श्रद्धा सहज ते त्रण प्रकारनी होय, सात्विक, राजस, तामसी; सुण ते केवी होय. ॥ ॥
हैयुं जेवुं होय छे तेवी श्रद्धा होय, श्रद्धामय छे मानवी, श्रद्धा जेवी होय. ॥ ॥
सात्विक पूजे देवने, राजस यक्ष भजे, तमोगुणीजन प्रेतने प्राणी अन्य भजे. ॥ ॥
शास्त्रोथी उलटी करे घोर तपस्या जे, दंभी अभिमानी अने कामी क्रोधी जे. ॥ ॥
आत्मारूप रह्या मने ते पीडा करता, निश्चय तेनो राक्षसी, फोगट श्रम करता. ॥ ५स्६ ॥
त्रण प्रकारनो सर्वनो खोराक कह्यो छे, यज्ञ, तप अने दाननो भेद बताव्यो छे. ॥ ॥
आयु वधे, आरोग्य हो, बल वधे वळी तेम, जेथी सुख लागे, बने अंतर टाढुं हेम; ॥ ॥
रसवाळुं ने मधुर ते सात्विक अन्न कह्युं, विद्वानोए तेहने उत्तम अन्न गण्युं. ॥ ॥
कडवुं तीखुं होय जे खाटुं ने खारुं, सूकुं ऊनुं खूब ते अन्न नहीं सारुं. ॥ ॥
दु:ख शोक ने रोग ते अन्न सदाय करे; राजस तेने छे कह्युं, ते सुखशांति हरे. ॥ ॥
खाधेलुं रसहीन ने टाढुं खूब थयुं, तेमज वासी अन्न ते तामस अन्न कह्युं. ॥ ॥
एठुं तेम अपवित्र ने दुर्गंधीवाळुं, तामस जनने ते गमे, अन्न नहीं सारुं. ॥ ॥
फल ईच्छाने मूकीने विधिपूर्वक जे थाय, करवा खातर यज्ञ ते, सात्विक यज्ञ गणाय. ॥ ॥
(फलनी ईच्छाने मूकी विधिपूर्वक जे थाय, करवा खातर यज्ञ ते, सात्विक यज्ञ गणाय. ॥ ॥)
फलनी ईच्छा राखतां, दंभ पोषवा थाय, यशने माटे यज्ञ ते राजस यज्ञ गणाय. ॥ ॥
दक्षिणा ने मंत्र ने श्रद्धा जेमां ना, तामस यज्ञ गणाय ते विधिये जेमां ना. ॥ ॥
ज्ञानी ब्राह्मण देव ने गुरु पूजा करवी, पवित्रता ने सरलता अंतरमां धरवी. ॥ ॥
ब्रह्मचर्यने पाळवुं, हिंसा ना करवी, शरीरनुं तप ते कह्युं, निर्बलता हरवी. ॥ ॥
सत्य मधुर बोलवुं, जेथी मंगल थाय, ज्ञानपाठ करवो वळी, ते वाणीतप थाय. ॥ ॥
(सत्य ने मधुर बोलवुं, जेथी मंगल थाय, ज्ञानपाठ करवो वळी, ते वाणीतप थाय. ॥ ॥)
प्रसन्न मनने राखवुं, चिंता ना करवी, विकार मनना टाळवाअ, चंचळता हरवी. ॥ ॥
शांति राखवी, जातनो संयम पण करवो, मौन राखवुं, हृदयमां शुद्ध भाव भरवो. ॥ ॥
विचार उत्तम राखवा, भेद दूर करवो, मननुं आ तप छे कह्युं, भय सौनो हरवो. ॥ ॥
फल ईच्छाने मूकीने, श्रद्धा राखी थाय, सात्विक तप तो आ त्रणे उत्तम एम गणाय. ॥ ॥
(फलनी ईच्छाने मूकी, श्रद्धा राखी थाय, सात्विक तप तो आ त्रणे उत्तम एम गणाय. ॥ ॥)
मान बडाई काज जे बतावा ज कराय, पूजावा खातर वळी, ते राजस तप थाय. ॥ ॥
अज्ञान अने हठ थकी संकट सही कराय, तामस तप ते, जे अन्यनो नाश करवा थाय. ॥ ॥
(अज्ञान अने हठ थकी संकट सही शकाय, तामस तप ते, अन्यनो नाश करवा कराय. ॥ ॥)
देवा खातर दान जे कोईने देवाय, समय पात्र जोई सदा, ते सात्विक केवाय. ॥ २० ॥
फळ मेळववा दान जे बदलामां देवाय, उपकार गणी दान जे, ते राजस कहेवाय. ॥ ॥

पात्र समय संजोगने जोया विना कराय, अयोग्य ने जाहेर ते तामस दान गणाय. ॥ ॥
ॐ अने तत् सत् कह्यां ईश्वरनां त्रण नाम, एथी ॐ कही सदा कराय मंगल काम. ॥ ॥
वेद यज्ञा ब्राह्मण थया तेमांथी सघळा, यज्ञ दान थाये लई नाम ते सघळां. ॥ ॥
तत् शब्द कहीने वळी तजी दई तृष्णा, मुमुक्षुजनो दान ने तप उत्तम करता. ॥ २५ ॥
साधु तेम सद्भावमां प्रयोग सत् नो थाय, उत्तम कर्मोमां सदा प्रयोग सत् नो थाय. ॥ ॥
यज्ञ दान ने तपमहीं स्थिति ते सत् कहेवाय, ते माटेना कर्मने सत् एम ज कहेवाय. ॥ ॥
श्रद्धा विना कराय जे कर्म यज्ञ तप दान, मंगल ते न करी शके, असत्य तेने मान. ॥ २८ ॥

अध्याय १८ : मोक्षसन्यासयोग

अर्जुन कहे छे :

तत्व कहो सन्यास ने त्याग तणुं मुजने, कोने त्याग कहो वळी, सन्यास कहो कोने. ॥ ॥
(तत्व कहो सन्यास ने त्याग तणुं मुजने, कोने त्याग कहो वळी, सन्यास कहो ते. ॥ ॥)

श्री भगवान कहे छे :

कर्मोना जे त्याग छे ते सन्यास गणाय, कर्मतणा फल त्यागवां तेने त्याग कहेवाय. ॥ ॥
कोई के' छे कर्म छे खराब तो त्यागो, कोई के' तप ज्ञ ने दान ना ज त्यागो. ॥ ॥
ते संबंधी सांभळी मारो मत तुं ले, त्याग कह्यो त्रण जातनो, सुणी हवे तुं ले. ॥ ॥
यज्ञ दान तप कर्म तो को'दी तजवां ना, यज्ञ दान तपथी बने पवित्र मानव हा! ॥ ५ ॥
अहंकार तृष्णा तजी आ कर्मो करवां, मत मारो में छे कह्यो, श्रेष्ठ कर्म करवां. ॥ ॥
नक्की कर्मोनो नहीं त्याग घटे करवो, त्याग करे को' मोहथी तो तामस ते गणवो. ॥ ॥
दुःखरूप सौ कर्म छे, दे शरीरने क्लेश, एम करेलो त्याग ते फल ना आपे लेश. ॥ ॥
(दुःखरूप सौ कर्म छे, दे शरीरने क्लेश, एम गणीने थाय ते फल ना आपे लेश. ॥ ॥)
राजस ते तो त्याग छे, जे चिंता भयथी थाय, कोई संकट आवतां, पडतां दुःख कराय. ॥ ॥
(राजस ते तो त्याग छे, चिंता भयथी थाय, कोई संकट आवतां, पडतां दुःख कराय. ॥ ॥)
तृष्णा मद त्यागी करे श्रेष्ठ कर्मने जे, ते प्रकारना त्यागने सात्विक के छे. ॥ ॥
सात्विक त्यागी प्रज्ञ ने संशयरहित सदाय, खराबने नींदे नहीं, सारामां न फसाय. ॥ १० ॥
बधां कर्म छोडी शके ना मानव को'दी, त्यागी ते छे जेमणे फल दीधुं छोडी. ॥ ॥
फलाशा करे तेमने त्रिविध मळे फल तो, ते फल त्यागीने नथी, त्याग करे जो को'. ॥ ॥
सर्व कर्मनी सिद्धिने माटे पांच कह्यां, कारण, ते सुणजे हवे, कारण पांच कह्यां. ॥ ॥
अधिष्ठान, कर्ता अने साधन भिन्न कह्यां, क्रिया जुदी ने पांचमु दैव, प्रबल सघळां. ॥ ॥
काया वाणी मनथकी जे पण कर्म कराय, तेनां आ कारण कह्यां, सारुभ माठुं कराय. ॥ १५ ॥
आथी आत्माने ज जे कर्ता माने छे, ते यथार्थ ज्ञानी नथी, कर्ता माने जे. ॥ ॥
अहंभाव जेने नथी, बुद्धि ना भरमाय, आखा जगने ते हणे तो ये ना बंधाय. ॥ ॥
ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता थकी कर्म-प्रेरणा थाय, कारण कर्म कर्ता थकी कर्म-समुच्चय थाय. ॥ ॥
ज्ञान कर्म कर्ता वळी त्रण प्रकारना छे, गुण परमाणे ते कहुं, प्रेमे सांभळजे. ॥ ॥
जुदा जुदा जीवमां प्रभु तो एक ज छे. एकता जुए जे सदा, सात्विक ज्ञान ज ते. ॥ २० ॥
भेदभावने जे जुए सघळे संसारे, जीव गणे जुदा बधा, राजस ज्ञान ज ते. ॥ ॥
(भेदभावने जे जुए संसारमहीं ने, जीव गणे जुदा बधा, राजस ज्ञान ज ते. ॥ ॥)

एकमां ज डुबे छे जे, एकने ज वळी गणे, अंध भ्रांतनी जेम, ज्ञान तामस ते भणे. ॥ ॥
रागद्वेष अहंताने छोडी चोक्कस थाय जे, फलेच्छाना विना कर्म, कर्म सात्विक मान ते. ॥ ॥
अहंकार अने कोई ईच्छा साथ कराय जे, यत्न खूब करी कर्म, कर्म राजस मान ते. ॥ ॥
संजोग, नाश ने हिंसा, बलने न विचारतां, मोहथी थाय जे कर्म, कर्म तामस ते थतां. ॥ ॥
नम्र, निर्दोष, आनंदी धैर्य उत्साहथी भर्यो, लाभहानिमहीं शांत कर्ता सात्विक ते कह्यो. ॥ ॥
रागी हिंसक ने मेलो, हर्षशोकथकी भर्यो, डूबेलो विषयोमां ते कर्ता राजस छे कह्यो. ॥ ॥
प्रमादी, शोकवाळो ने कपटी जडताभर्यो, अज्ञानी, स्थिर ना जे ते कर्ता ताम्स चे कह्योओ. ॥ ॥
बुद्धि ने धैर्यना पाड्या प्रकारो त्रण छे, कहुं ते तुजने पार्थ प्रेमथी सुणजे हवे. ॥ ॥
शुं करवुं शुं छोडवुं एने जाणे जे, बंध मोक्ष जाणे वळी बुद्धि सात्विक ते. ॥ ३० ॥
शुं करवुं शुं छोडवुं तेमज धर्म अधर्म, राजस बुद्धि तेहनो जाणे जाणे पूर्ण न मर्म. ॥ ॥
माने धर्म अधर्मने अज्ञानथकी जे, उलटुं समजे सर्वने, बुद्धि तामस ते. ॥ ॥
मन ने ईन्द्रिय प्राण सौ जेनाथी वश थाय, अडग धैर्य ते ते खरे सात्विक धैर्य गणाय. ॥ ॥
ईच्छा कोई राखतां जेथी धर्म कराय, ईच्छा शमतां जे शमे, राजस धैर्य गणाय. ॥ ॥
स्वप्न भीति ने शोक ने मद ने लाख उपाय, मूढ मूके जेथी न ते तामस धैर्य मनाय. ॥ ३५ ॥
त्रण प्रकारनुं जे सुख कह्युं ते सांभळ तुं, दुःख दूर करवा तने प्रेमे आज कहुं. ॥ ॥
पहेलां झेरसमुं अने अंते मीठुं जे, प्रसन्न मन अंतर करे, सात्विक सुख छे ते. ॥ ॥
ईन्द्रियोना स्वादथी पहेलां मीठुं जे, अंते झेर समान छे, राजस सुख छे ते. ॥ ॥
पहेलां ने अंतेय जे मनने मोह करे, प्रमाद आळस ऊंघ ते तामस सुख सौ छे. ॥ ॥
पृथ्वी तेम ज स्वर्गमां कोई एवुं ना, जे आ गुणथी मुक्त हो, कोई एवुं ना. ॥ ४० ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यनां कर्म शूद्रनां तेम, स्वभावगुणथी छे कर्या समजी लेजे एम. ॥ ॥
संयम मन ईन्द्रियनो, तप तेमज करवुं, क्षमा राखवी, प्रभुमहीं श्रद्धाथी तरवुं. ॥ ॥
नम्र पवित्र बनी सदा श्रेष्ठ पामवुं ज्ञान, ब्राह्मणना ते कर्म छे मेळववुं विज्ञान. ॥ ॥
शूरवीर ने चपळ ने तेजस्वी बनवुं, धीरज धरवी युद्धथी पाछा ना फरवुं. ॥ ॥
दानी बनवुं, श्रेष्ठता भाव सदा सदा राखवो, ए क्षत्रियना कर्म छे, दयाभाव धरवो. ॥ ॥
वैश्यकर्म खेती अने गौ सेवा वेपार, सेवनां कर्मो बधां कर्म शूद्रना धार. ॥ ॥
पोतानां कर्मो करी सिद्धि मेळववी, प्रभु-अर्थे कर्मो करी सिद्धि मेळववी. ॥ ४५ ॥
जेणे जगने छे रच्युं, जेथी जग चाले, पूजी तेने कर्मथी सिद्धिमां म्हाले. ॥ ॥
खराब पोतानो भले धर्म होय तोये, बीजाना शुभ धर्मथी ते उत्तम होये. ॥ ॥
सदोष होय तोय ना सहज कर्म तजवुं, कर्म बधाये दोषथी व्याप्त थयां, गणवुं. ॥ ॥
आसक्ति तृष्णा तजी संयम तेम करी, सिद्धि उत्तम मेळवे त्यागथकी सघळी. ॥ ॥
सिद्धि तेमज ब्रह्मने जे रीते पामे, कहुं ते वळी ज्ञाननी निष्ठा जे पामे. ॥ ५० ॥
शुद्ध बुद्धिने मेळवी, संयम साधीने, विषय तजीने, राग ने द्वेष हणीने जे; ॥ ॥
वसे विजनमां जीततां काय मन वाणी, मिताहार करतां थई वैरागी ध्यानी. ॥ ॥
संग्रह बळ ने दर्प ने काम क्रोध अभिमान, तजी शांत बननारने प्रभुनी थाये जाण. ॥ ॥
ब्रह्मभूत ते ना कदी हर्षशोक करतो, समदृष्टि बनतां सदा मुज भक्ति लभतो. ॥ ॥
रहस्य मारुं भक्तिना बळथी पूर्ण जणाय, रहस्य जाणी छेवटे मुजथी एक बनाय. ॥ ५५ ॥

मारे शरणे आवतां कोई कर्म करे, मुज कृपाथकी तेमने उत्तम धाम मळे. ॥ ॥
मनथी कर्मो तुं मने अर्पी सघणां दे, मारामां मन राख ने ज्ञान मेळवी ले. ॥ ॥
मारी कृपाथकी बधां संकट तुं तरशे, ना सुणशे अभिमानथी तो तो नष्ट थशे. ॥ ॥
अहंकारथी ना कहे भले युद्ध करवा, स्वभाव तारो प्रेरशे पण तुजने लडवा. ॥ ॥
सहज कर्म वळग्युं तने तेथी जे तजवुं मोहथकी लागे तने, ते पडशे करवुं ॥ ६०॥
ईश्वर सौना हृदयमां अर्जुन! वास करे, तेना बळथी कर्म सौ आ संसार करे. ॥ ॥
पूर्ण प्रेमथी शरण तुं तेनुं ज लई ले, देशे उत्तम स्थान ने परम शांति तो ते. ॥ ॥
ज्ञान गुह्यमां गुह्य आ तने कह्युं छे में, विचारी लई ते हवे कर करवुं होय ते. ॥ ॥
खूब गुप्त आ ज्ञानने फरी सांभळी ले, हितनी वात कहुं हवे, प्रिय तुं खूब मने. ॥ ॥
मनथी भज मुजने अने तनथी कर सेवा, कर्म मने अर्पण करी माणी ले मेवा. ॥ ॥
जगमां जोईने मने वंदन कर हररोज, मने पामशे सत्य तुं करतां मारी खोज. ॥ ॥
मन वाणीथी भक्त था मारो केवल तुं, शांति तेम सुख पामशे, सत्य कहुं छुं हुं. ॥ ॥
चिंता सघळी छोड ने मारुं शरणुं ले, पाप बधा टाळीश हुं, शोक तजी तुं दे. ॥ ॥
भक्त न मारो होय जे तपस्वी ना होय, नींदे मुजने, ना चहे सांभळवाने कोय; ॥ ॥
तेने में आपेल आ कहीश ना तुं ज्ञान, कहीश मारा भक्तने तो करशे ते कल्याण. ॥ ॥
गुह्य ज्ञान आ भक्तने जे कोई केशे, भक्ति मारी ते करी लभी नमे लेशे. ॥ ॥
तेनाथी मुजने नहीं प्रिय कोई हशे, प्रिय तेनाथी को नथी आ संसार विशे. ॥ ॥
धर्मतणो संवाद आ वांचे प्रेमे जे, ज्ञानयज्ञथी पूजशे मुजने साचे ते. ॥ ७०॥
पवित्रता श्रद्धाथकी जे आने सुणशे, सुखी लोकमां ते जशे, मुक्त वळी बनशे. ॥ ॥
ध्यान दई तें सांभळ्युं आ अर्जुन सगळुं अंधारूं अज्ञाननुं थयुं दूर सघळुं
अर्जुन कहे छे :
तम कृपाथी मव्यो मोह ने मळ्युं ज्ञान, आज्ञा आपो ते करुं, संशय टळ्यो महान. ॥ ॥
(तमारी कृपाथी मव्यो मोह ने मळ्युं ज्ञान, आज्ञा आपो ते करुं, संशय टळ्यो महान. ॥ ॥)
संजय कहे छे :
कृष्ण अने अर्जुननो संवाद सुण्यो में, रोमांचित करनार ने अद्भूत एवो ते. ॥ ॥
योगेश्वर कृष्णे कह्यो आ संवाद खरे, व्यास कृपाथी सांभळ्यो आ संवाद खरे. ॥ ७५ ॥
याद करी संवाद ए अद्भूत अचरज थाय, याद करी संवाद ए आनंद खूब ज थाय. ॥ ॥
अर्जुन तेमज कृष्ण बे भेगा ज्यां थाये, त्यां धन जय नक्की रहे, वैभव ना माये. ॥ ॥
योगेश्वर ज्यां कृष्ण छे, पार्थ धनुर्धर ज्यां, सिद्धि, मुक्ति, शांति ने नीति रहे छे त्यां. ॥ ७८॥
- सरल गीता समाप्त -
उपसंहार
साबरमतीमहीं रही मंगल गुर्जर देश, पूर्ण कर्यो आ प्रमथी गीतानो उपदेश.
अधिक मास वैशाख ने वद एकादश रोज, शनिवारे पूरी करी गीताजीनी मोओज.
ओगणीसो त्रेपन सने बे हजार नवमां, पूर्न थई गीता खरे ज्ञाननाव भवमां.
(- श्री योगेश्वरजी)
समाप्त

ईथङाब्ल् तरअनसलइतएरअतइोन दोनए बय ल्उरएसह् 'टयअस', पअनचह्अजअनयअध्याएोचइतइएस ाचोम,
अनद पलअचएद तह्इस ोन ड़एब पअगए फअनचह्अजअनयअः हततपः//ड़ड़ाएोचइतइएस ाचोम//ातह्एनस
ालल घलोरइएस तो ल्रइ भह्अकतइवएदअनतअ ल्ड़अमइ फरअबह्उपअदअ।

इति श्री सरल गीता (गुजराती) ।

निचोदएद बय ल्उरएसह् टयअस (पअनचह्अजअनयअध्याएोचइतइएस ाचोम)
धअतएः १स्१स्५१०१ ढउगअबदअ (१८स्३स्१९९९ छ्रि)

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

Last updated March 23, 1999